वैज्ञानिक पद्धति से लिखी गई
ज्योतिष विषयक एक अनुपम पुस्तक

डॉ० हरिकृष्ण छंगाणी

ज्योतिष-विज्ञान

(एक सरल अध्ययन)

140
ज्योतिष-विज्ञान
हरिकृष्ण छंगाणी





प्रस्तुत पुस्तक में ज्योतिष के आवश्यक उपादेय विषयों को एक ही स्थान पर बोधगम्य रूप में उपस्थित कर दिया गया है, जिसकी सहायता से कोई भी व्यक्ति सफल ज्योतिषी बन सकता है। पुस्तक में जहाँ कतिपय नवीन विषय दिये गये हैं, वहाँ अन्य विषयों पर नवीन दृष्टिकोण से प्रकाश भी डाला गया है, जिसके कारण पुस्तक ज्योतिष के नवीन शिक्षार्थियों के साथ-साथ विद्वानों के लिए भी लाभप्रद बन गई है।

वैज्ञानिक पद्धति से लिखी गई ज्योतिष-विषयक एक अनुपम पुस्तक

प्रस्तुत पुस्तक में ज्योतिष के आवश्यक उपादेय विषयों को एक ही स्थान पर बोधगम्य रूप में उपस्थित कर दिया गया है, जिसकी सहायता से कोई भी व्यक्ति सफल ज्योतिषी बन सकता है। पुस्तक में जहाँ कतिपय नवीन विषय दिये गये हैं, वहाँ अन्य विषयों पर नवीन दृष्टिकोण से प्रकाश भी डाला गया है, जिसके कारण पुस्तक ज्योतिष के नवीन शिक्षार्थियों के साथ-साथ विद्वानों के लिए भी लाभप्रद बन गई है।

वैज्ञानिक पद्धति से लिखी गई ज्योतिष-विषयक एक अनुपम पुस्तक

अनुपम पॉकिट बुक्स के अन्तगत अनुभवी व्यवस्थापकों के निर्देशन में तैयार की गई, देश-विदेश के लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकारों की अत्यन्त सुरुचिपूर्ण पुस्तकें ही प्रकाशित होती हैं।

ज्योतिष-विज्ञान

(एक सरल अध्ययन)

डॉ० हरिकृष्ण छंगाणी



अनुपम पॉकेट बुक्स



प्रकाशक	अनुपम पॉकेट बुक्स, शक्तिनगर, दिल्ली-७
कॉपीराइट	प्रकाशकाधीन
द्वितीय संस्करण	जुलाई, १९७३
कलापक्ष	शुक्ल, दिल्ली
मुद्रक	रामाकृष्णा प्रिंटिंग प्रेस, कटरा नील, दिल्ली-६

मूल्य : तीन रुपये

भूमिका

वेद के छः अङ्गों में से ज्योतिष शास्त्र भी एक है। ज्योतिष शब्द का अर्थ है प्रकाश। प्रकाश से हमारा तात्पर्य ईश्वरीय प्रकाश से है, जिससे समस्त चराचर जगत् प्रकाशित है। इस प्रकाश का सम्बन्ध नेत्र से भी है। उस जगन्नियन्ता परमात्मा का नेत्र सूर्य है:—'चक्षोः सूर्योऽजायत'। इसके अतिरिक्त 'ज्योतिषं वेद चक्षु' कह कर ज्योतिष को वेद पुरुष का नेत्र कहा गया है। जिस प्रकार सम्पूर्ण अङ्गों के रहते हुए भी नेत्रहीन कुछ नहीं कर सकता; उसी प्रकार बिना ज्योतिष के (ईश्वरीय प्रकाश के) सूर्य-चन्द्र के अभाव में लौकिक-पारलौकिक कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता।

रात्रि के समय आकाश के नीले वितान पर आभासित प्रकाश-पिण्ड, प्रतिदिन अपनी ओर हमारे नेत्रों को आकृष्ट करते हैं। इनके अन्तर्गत गम्भीर रहस्य की जिज्ञासा हेतु मानव-मनीषा सर्वथा प्रयत्नशील रही है। उसे इस विषय में ज्यों-ज्यों सफलता मिलती गई है, त्यों-त्यों इसमें रहस्यमय शृंखलाओं का समावेश होता गया है।

इस शास्त्र में प्राणियों की जन्मकाल सम्बन्धी ग्रहस्थिति से उनके जीवन में घटित होने वाले शुभाशुभ कार्यों का निर्देश किया गया है। सुदूर आकाश में भ्रमणशील ग्रह पिण्डों का भूतल निवासियों पर प्रभाव पड़ता है। ये ग्रह पिण्ड प्राणियों के भाग्य-नियन्ता हैं। वराहमिहिर कहते हैं कि—"पूर्वजन्म में जो शुभाशुभ कर्म किया जाता है उसको यह शास्त्र उसी प्रकार स्पष्ट कर देता है

जिस प्रकार घनान्धकार में अदृश्य पदार्थों को दीपक प्रकाशित कर देता है ।"

ग्रहों एवं राशियों तथा नक्षत्रों का मानव-जीवन से शाश्वत सम्बन्ध है, जो वर्तमान विज्ञान से भी सिद्ध हो चुका है। भास्कराचार्य ने भी कहा है कि :—

सूर्यात्मा दिनकृन्मनश्चहिमगुः सत्वं कुजो ज्ञो गिरा ।
जीवो ज्ञानमथोसितश्च मदनः दुःख दिनेशात्मजः ।।

सूर्य का सम्बन्ध आत्मा से, मन का सम्बन्ध चन्द्रमा से, शक्ति का सम्बन्ध मंगल से, वाणी का सम्बन्ध बुध से, ज्ञान का सम्बन्ध शुक्र से और दुःख का सम्बन्ध शनि से है ।

मुझे अत्यन्त हर्ष एवं गर्व है कि उपर्युक्त प्रतिपादित समस्त ज्योतिष विषयों को लक्ष्य में रखते हुए मेरे पट्ट शिष्य श्री हरिकृष्ण जी छंगाणी ने जन-सामान्य के लाभार्थ एवं लोक कल्याण कामना से प्रेरित होकर इस पुस्तक की रचना की है । ज्योतिष जैसे लोकोपयोगी सफल शास्त्र पर लेखनी उठाकर विद्वान लेखक ने वस्तुतः एक लोकोपयोगी कार्य किया है । विद्वत्मण्डल व जनसाधारण में इसका प्रचार हो, इस कामना के साथ मैं लेखक को हार्दिक बधाई देता हूँ ।

व्याख्यान वाचस्पति सत्यनारायण मिश्र,
मदन मोहन मालवीय डिग्री कालेज,
भाटपारानी (देवरिया) उ० प्र०

सन्देश

Sothida Mannan, Jyotish Marthand
K.S. Krishnamurti,
Editor 'Astrology & Athrishta',
Madras.

I have the pleasure to note that Shri H.K. Chhangani, M.A., D. Litt.., ph. D., in Astrology is bringing out a book on Astrology in Hindi—"Astrology—An Easy and Scientific Study," Shri Chhangani who has been conferred with title "Maharshi" is well-versed in Hindu Astrology as well as Krishnamurti Padhdhati. He is always alert on the scientific activities in Astrology that go on around him. I have gone through the index of the book and I hope that this book will cater the need for not only the beginners of Astrology in Hindi but also for others. Since I do not know Hindi, I expect that this book written in Hindi is an easy understandable approach of Astrology in Hindi and will observe praise for his contribution. Let me pray to Uchista Maha Ganapati for the usefulness of the book.

(K.S. Krishnamurti)

सन्देश

Dr. B.V. Raman. D. Litt.
Editor 'The Astrological Magazine',
Bangalore.

Dear Shri Chhangani,

I am glad to learn that you are shortly bringing out in Hindi, a book on Astrology, entitled "Astrology—An Easy & Scientific Study".

From the list of contents furnished, it looks as though the book is Comprehensively planned. It should therefore prove useful not only to students wishing to learn the subject, but also for savants to trim their own knowledge.

Books written in a simple and scientific way on Astrology are needed and I do hope your book will supply such a need.

Wishing you every success,

Yours Sincerely
(B.V. Raman)

सन्देश

पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य
अध्यक्ष—अखिल भारतीय ज्योतिष परिषद (पञ्जीकृत)
प्रधान सम्पादक—'ज्योतिष्मती'
सोलन (हिमाचल)

प्रिय श्री छंगाणी जी,

आपकी पुस्तक 'ज्योतिष-विज्ञान—एक सरल अध्ययन' प्रकाशित हो रही है, यह जानकर प्रसन्नता हुई। विषयों का चयन सूझबूझ से किया गया है। अवश्य ही पुस्तक सर्व साधारण के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। विषय सूची के देखने से पुस्तक की उपयोगिता स्वयं सिद्ध है।

आशा है, इसमें आप सभी अनुभव सिद्ध योग देकर पाठकों का उपकार करेंगे। कठिन विषयों को सरल सोदाहरण रक्खें ताकि साधारण हिन्दी का विद्यार्थी भी विषय में प्रवेश कर सके।

अपने कार्य में सफल होने के लिए मेरी मंगल कामना है।

भवदीय
(हरदेव शर्मा त्रिवेदी)

सन्देश

आचार्य भास्करानन्द लोहनी,
अध्यक्ष—भारतीय ज्योतिर्विद सम्मेलन
सम्पादक—'आग्रहायरण'
लखनऊ (उ० प्र०)

प्रिय श्री छंगाणी जी,

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि सहयोगी महर्षि श्री हरिकृष्ण छंगाणी ने 'ज्योतिष-विज्ञान—एक सरल अध्ययन' पुस्तक लिखी है, जो शीघ्र प्रकाशित होने जा रही है।

जैसा कि पुस्तक का शीर्षक है—मैं समझता हूँ ज्योतिष के नवीन शिक्षार्थियों के लिए वैज्ञानिक पद्धति और सरल तरीके से ज्योतिष का ज्ञानार्जन करने में यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी।

लेखक अपने विषय के अनुभवी व प्रतिष्ठित तथा अधिकारी विद्वान हैं। पुस्तक में जन्म-कुण्डली की सामान्य पारिभाषिक व्याख्यापूर्वक द्वादश भावों का सम्यक विवेचन हुआ है। इस पुस्तक-लेखन के लिए लेखक को हार्दिक बधाई देते हुए शुभ-कामना करता हूँ।

(भास्करानन्द लोहनी)

अपनी बात

मनुष्य में अपना भविष्य जानने की इच्छा उतनी ही पुरातन है जितना कि स्वयं मनुष्य। "To know the future has been the greatest ambition of man."

वनं समाश्रिता येऽपि निर्ममा निष्परिग्रहाः।
अपि ते परिपृच्छन्ति ज्योतिषां गति कोविदम्॥

अर्थात् जो सर्व संग परित्याग कर वन का आश्रय ले चुके हैं, ऐसे राग-द्वेष शून्य, निष्परिग्रह मुनिजन, सन्त एवं महात्मा भी ज्योतिष शास्त्रवेत्ताओं से भविष्य ज्ञात करने के लिए उत्सुक रहते हैं, तब साधारण संसारी प्राणी की तो चर्चा ही क्या ?

ज्योतिष-विज्ञान इस भविष्य को जानने का एक प्राचीन विज्ञान है। वह एक महासागर है। उसे पार करने के लिए गुरु रूपी केवट की अपेक्षा बनी रहती है। प्रस्तुत पुस्तक में ज्योतिष के आवश्यक उपादेय विषय को एक ही स्थान पर बोधगम्य रूप में उपस्थित कर दिया गया है, जिसकी सहायता से कोई भी व्यक्ति सफल ज्योतिषी बन सकता है। इस पुस्तक में कतिपय विषय तो बिलकुल नवीन दिए गए हैं और अन्य विषयों पर नवीन दृष्टिकोण से प्रकाश डाला गया है। आशा है, उनसे ज्योतिष का ज्ञानार्जन करने वाले नवीन शिक्षार्थी और प्राचीन-पद्धति के ज्योतिष विद्वान भी पूर्ण लाभ उठायेंगे।

आपका भविष्य कैसा है ? आपकी आर्थिक स्थिति कैसी रहेगी ? आपकी शिक्षा कितनी होगी ? आपके लिए कौन-सा व्यवसाय सफलता सूचक है ? सन्तान सुख कैसा रहेगा ? वैवाहिक जीवन कैसा रहेगा ? भाग्योदय कब होगा ? सट्टा या लाटरी-योग कैसा रहेगा ? अनेक वर्षों के प्रायोगिक अनुभव (Practical Experience) पर आधारित ऐसे सैकड़ों प्रश्नों के उत्तर प्रस्तुत पुस्तक में सोदाहरण दिए गए हैं।

मैं उन सभी बन्धुओं व विद्वानों का आभार प्रदर्शन करता हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक के लिखने में मुझे प्रेरणा एवं सहायता दी है एवं उनके प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापन करता हूँ, जिनकी जन्म कुण्डलियों का उपयोग मैंने इस पुस्तक में किया है। पुस्तक के तैयार करने में मुझे जिन ज्ञात-अज्ञात विद्वानों अथवा उनके ग्रंथों का सहयोग प्राप्त हुआ है, उन सबके प्रति भी मैं आभार प्रदर्शन करता हूँ।

श्रद्धेय गुरूजी श्री सत्यनारायण जी मिश्र संस्कृत व ज्योतिष के प्रकाण्ड विद्वान हैं। आप के ही चरण-कमलों में रहकर मैंने ज्योतिष-शास्त्र का अध्ययन किया है। आपने कृपा कर इस पुस्तक की भूमिका लिखकर मुझे विशेष अनुगृहीत किया है। श्री के० एस० कृष्णमूर्ति जी, श्री बी० वी० रमन, श्री हरदेव जी त्रिवेदी व श्री भास्करानन्द जी लोहनी ने अपने सन्देश व अमूल्य सुझाव भेज कर मुझे अनुगृहीत किया है। मैं इसके लिये इन सभी विद्वानों का हृदय से आभारी हूँ।

विशेष रूप से मैं अनुपम पाकेट बुक्स के प्रकाशक श्री ओमप्रकाश जी का आभारी हूँ जिनकी तत्परता व सहयोग से यह पुस्तक आपके हाथों में पहुँच सकी है।

पुस्तक-लेखन में, मैं कहाँ तक कृतकार्य हुआ, इसका निर्णय पाठक स्वयं करेंगे, लेकिन इसमें जो कुछ कमियाँ रह गयी हैं, विद्वान पाठकों के अमूल्य सुझावों पर पूर्ण ध्यान देकर आगामी संस्करण में उन्हें भी दूर करने का प्रयत्न किया जायेगा ।

छंगाणी स्ट्रीट, विनीत
फलोदी (राजस्थान) हरिकृष्ण छंगाणी

विषय-सूची

मानव-जीवन और ज्योतिष

मानव, स्वभाव से ही अन्वेषक प्राणी है। वह संसार की प्रत्येक वस्तु के साथ जीवन का तादात्म्य सम्बन्ध स्थापित करना चाहता है। उसकी इसी प्रवृत्ति के कारण वह शास्त्रीय व व्यावहारिक ज्ञान द्वारा प्राप्त अनुभव को ज्योतिष की कसौटी पर कस कर देखना चाहता है कि ज्योतिष का मानव जीवन में क्या स्थान है ?

ज्योतिष-विज्ञान क्यों है ? मानव उसमें अधिक अभिरुचि क्यों लेता है ? वह देखता है कि प्रकृति में निहित शक्ति उसके जीवन पर महान् प्रभाव डाल रही है। एक व्यक्ति धनवान गृह में जन्म लेता है तो दूसरा भिखारी की झोंपड़ी में। एक अपना जीवन दुःखपूर्ण व्यतीत करता है और दूसरा सानन्द। इसका कारण क्या है ? कारण स्पष्ट है—प्रकृति में निहित शक्ति यह सब प्रभाव डाल रही है। तब इस अदृश्य शक्ति को जानने का क्या साधन है ? साधन है—ज्योतिष-विज्ञान। इस विज्ञान के अन्तर्गत उस समूची प्रक्रिया का प्रतिपादन आ जाता है, जिससे मनुष्य के जीवन में आने वाले हर्ष-विषाद, हानि-लाभ, सुख-दुःख और उत्थान-पतन आदि को पहले से ही जाना जा सकता है।

विश्व में प्राणिमात्र के जीवन का स्तर अनन्त ब्रह्माण्ड के प्राकृतिक प्रभाव के प्रभाव पर ही अवलम्बित है। इसमें सन्देह नहीं है, क्योंकि "यद् ब्रह्माण्डे तत्पिण्डे" इस सिद्धान्त से यह स्पष्ट विदित होता है कि जिन तत्वों से ब्रह्माण्ड का सृजन

हुआ उन्हीं तत्वों से ब्रह्माण्डगत समग्र पिण्डों का भी सृजन हुआ है।

ग्रहों का चक्र अनवरत रूप से चल रहा है और मानव-जीवन की छोटी से लेकर बड़ी से बड़ी गतिविधि पर उनका प्रभाव पड़ रहा है। जन्म लेते ही ग्रह-रश्मियों का प्रभाव मानव-जीवन पर पड़ जाता है। ग्रहों का प्रभाव मानव-जीवन पर पड़ता है, यह कल्पना नहीं—प्रत्यक्ष सत्य है। समुद्र में ज्वार-भाटा का कारण चन्द्र ही माना जाता है। चन्द्र के ही प्रभाव से समुद्र में ज्वार-भाटा आता है। इस तथ्य को सभी वैज्ञानिक स्वीकार कर चुके हैं। अमावस्या और पूर्णिमा को 'फाइलेरिया' की वृद्धि से विदित होता है कि 'फाइलेरिया' बीमारी में भी चन्द्र प्रधान कारण है। जिस प्रकार चन्द्र समुद्र में उथल-पुथल मचा देता है, उसी प्रकार मनुष्य के शरीर पर भी अपना प्रभाव व्यक्त करता है। वराहमिहिर ने मनुष्य के अतिरिक्त पशु-पक्षी, स्थावर-जंगम पर भी ग्रहों का प्रभाव बताया है। यदि हम इस तथ्य की खोज करें तो मनुष्य पर ग्रहों के प्रभाव की पुष्टि विशेष रूप से हो ही जाती है। वनस्पतियों पर चन्द्र व सूर्य का प्रभाव प्रत्यक्ष है। कुमुद रात्रि में ही खिलता है। दिन में वह सम्पुटित हो जाता है। इसी प्रकार कमल दिन में खिलता है और रात में सम्पुटित हो जाता है। सूर्यमुखी पुष्प पर सूर्य की दिशाओं का प्रभाव पड़ता है। सूर्य जिस दिशा में जाता है सूर्यमुखी का पुष्प भी उसी दिशा में अपना मुख कर लेता है।

अतः यह सिद्ध हो जाता है कि ग्रहों का मनुष्य, पशु, पक्षी, स्थावर और जंगम सभी पर प्रभाव पड़ता है। किं बहुना—'प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यस्य साक्षिणौ'—यह शास्त्र प्रत्यक्ष है जिसके गवाह सूर्य और चन्द्र सर्वदा घूम-घूम कर लोगों को साक्षी देते हैं।

राशि-परिचय

हमारी पृथ्वी सूर्य के चारों ओर परिभ्रमण करती है। उसके मार्ग को बारह भागों में बाँटा गया है। इस मार्ग के प्रत्येक स्थल की पहचान तारों के विविध प्रकार के झुण्डों से होती है। तारों के इसी झुण्ड को 'राशि' कहते हैं।

ज्योतिर्विज्ञान में कुल बारह राशियाँ हैं:—मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन।

चर, स्थिर और द्विस्वभाव राशियाँ

मेष, कर्क, तुला और मकर चर राशियाँ हैं। वृषभ, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ स्थिर राशियाँ हैं। मिथुन, कन्या, धनु और मीन द्विस्वभाव राशियाँ हैं।

राशियों के तत्व

मेष, सिंह और धनु अग्नि तत्व की राशियाँ हैं। वृषभ, कन्या और मकर पृथ्वी तत्व की राशियाँ हैं। मिथुन, तुला और कुम्भ वायु तत्व की राशियाँ हैं। कर्क, वृश्चिक और मीन जल तत्व की राशियाँ हैं।

पुरुष तथा स्त्री राशि

मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ पुरुष राशियां हैं। वृषभ, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन स्त्री राशियाँ हैं।

राशियों के स्वामी

राशि	स्वामी
मेष	मंगल
वृषभ	शुक्र
मिथुन	बुध
कर्क	चन्द्र
सिंह	सूर्य
कन्या	बुध
तुला	शुक्र
वृश्चिक	मंगल
धनु	वृहस्पति
मकर	शनि
कुम्भ	शनि
मीन	वृहस्पति

राशियों के स्वामियों को कण्ठस्थ करने के लिए निम्न-लिखित श्लोक उपयोगी सिद्ध होगा।

मेषवृश्चिकयोभोमः शुक्रो वृषतुलाधिपः।
बुधः कन्यामिथुनयोः पतिः कर्कस्य चन्द्रमा : ॥
सिंहस्याधिपतिः सूर्यो धनुर्मीनकयोर्गुरुः।
अधिपः कथितो विज्ञैः शनिर्मकरकुम्भयो : ॥

ग्रह-परिचय

ज्योतिर्विज्ञान में कुल नौ ग्रह माने गये हैं। जिनमें सात ग्रह सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, और शनि तथा दो छाया ग्रह राहु और केतु हैं।

ग्रहों की स्व, उच्च स्व नीच राशियाँ

ग्रह	स्वराशि	उच्च राशि	नीच राशि
सूर्य	सिंह	मेष	तुला
चन्द्र	कर्क	वृषभ	वृश्चिक
मंगल	मेष, वृश्चिक	मकर	कर्क
बुध	मिथुन, कन्या	कन्या	मीन
बृहस्पति	धनु, मीन	कर्क	मकर
शुक्र	वृषभ, तुला	मीन	कन्या
शनि	मकर, कुम्भ	तुला	मेष
राहु	कन्या	वृषभ या मिथुन	धनु
केतु	मीन	वृश्चिक या धनु	मिथुन

ग्रह स्वराशि में प्रबल होता है। उच्च राशि में विशेष प्रबल होता है। नीच राशि में निर्बल होता है।

वक्री और मार्गी

जो ग्रह अपनी गति पर आगे बढ़ता रहता है, मार्गी कह-

लाता है और जो ग्रह उल्टा चलने लग जाता है, वक्री कहलाता है।

मार्गी ग्रह प्रवल और वक्री ग्रह निर्बल होता है।

उदय और अस्त

जो ग्रह आकाश में कभी भी रात्रि में दिखाई देता है, वह उदय कहलाता है और जो ग्रह कभी भी रात्रि में दिखाई नहीं देता, वह अस्त कहलाता है। जब कोई ग्रह सूर्य के समीप आता है तो वह दिखाई नहीं देता और अस्त कहलाता है।

पुरुष तथा स्त्री ग्रह

सूर्य, मंगल और बृहस्पति पुरुष ग्रह हैं। चन्द्र और शुक्र स्त्री ग्रह हैं। बुध पुरुष नपुंसक है और शनि स्त्री नपुंसक है।

ग्रहों के तत्व

सूर्य, मंगल	—	अग्नि तत्व
चन्द्र, शुक्र	—	जल तत्व
बुध	—	पृथ्वी तत्व
बृहस्पति	—	आकाश तत्व
शनि	—	वायु तत्व

भाव कारक ग्रह

भाव		ग्रह
प्रथम भाव	—	सूर्य
द्वितीय भाव	—	बृहस्पति
तृतीय भाव	—	मंगल
चतुर्थ भाव	—	चन्द्र और बुध
पञ्चम भाव	—	बृहस्पति
षष्ठ भाव	—	शनि, मंगल
सप्तम भाव	—	शुक्र
अष्टम भाव	—	शनि

नवम भाव	—	सूर्य, बृहस्पति
दशम भाव	—	सूर्य, बुध, बृहस्पति, शनि
एकादश भाव	—	बृहस्पति
द्वादश भाव	—	शनि

वस्तुओं के स्थिर कारक ग्रह

सूर्य—माणिक्य, लाल वस्त्र, राज्य, वन, पर्वत और पिता आदि का कारक सूर्य है।

चन्द्र—मोती, मन, माता, गन्ध, ब्राह्मण, पृथ्वी, कपास, गेहूँ, ईख और चाँदी आदि का कारक चन्द्र है।

मंगल—मूँगा, हिम्मत, भूमि, भाई, पराक्रम, राज्य, अग्नि और शत्रु आदि का कारक मंगल है।

बुध—पन्ना, ज्योतिष, गणित, नृत्य, मामा, वैद्य, डाक्टरी शिल्प और विद्या आदि का कारक बुध है।

बृहस्पति—पुखराज, देवता, यज्ञ, ब्राह्मण, धर्म, स्वर्ण, पुत्र, वस्त्र और मित्र आदि का कारक बृहस्पति है।

शुक्र—हीरा, पत्नी, काम-शास्त्र, काव्य, यौवन, चाँदी, सवारी वैभव और कविता आदि का कारक शुक्र है।

शनि—नीलम, तेल, यात्रा, मृत्यु, शस्त्र, शिल्प, रोग, नौकर, भैंस और आयु आदि का कारक शनि है।

राहु—गोमेदक, छिपा हुआ धन, सट्टा, मृत्यु, खोई हुई वस्तु और सर्प आदि का कारक राहु है।

केतु—लहसुनिया, चर्म, घाव और दुःख आदि का कारक केतु है।

ग्रहों की मित्रता

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
सूर्य	चन्द्र, मंगल, गुरु	बुध	शुक्र, शनि

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
चन्द्र	सूर्य, बुध	मं० गु० शु० श०	×
मंगल	सूर्य, चन्द्र, गुरु	शुक्र, शनि	बुध
बुध	सूर्य, शुक्र	मं० गु० श०	चन्द्र
बृहस्पति	सूर्य, चन्द्र, मंगल	शनि	बुध, शुक्र
शुक्र	बुध, शनि	मंगल, गुरु	सूर्य, चन्द्र
शनि	बुध, शुक्र	गुरु	सू० चं० मं०

ग्रहों की दृष्टियाँ

पश्यन्ति सप्तम सर्वे शनि - जीव कुजाः पुनः ।
विशेषतश्च त्रिदश—त्रिकोण—चतुरष्टमान ॥

सभी ग्रहों की सातवीं दृष्टि होती है। शनि, बृहस्पति और मंगल की सातवीं दृष्टि के अतिरिक्त विशेष दृष्टियाँ होती हैं। शनि की तीसरी व दसवीं, बृहस्पति की पाँचवीं और नवीं तथा मंगल की चौथी और आठवीं दृष्टियाँ होती हैं।

जन्म-कुण्डली व आवश्यक सारणियाँ

सही जन्म-कुण्डली के अभाव में फल नहीं मिलने पर ज्योतिष-शास्त्र को दोष दिया जाता है, परन्तु वास्तविकता यह है कि अक्षांश और देशान्तर का सही ज्ञान न 'होने पर तथा आवश्यक

सारणियों के अभाव में अनुमान से अनिश्चित समय को 'इष्ट काल' मानकर जो जन्म-कुण्डलियाँ बनाई जाती हैं, उनसे फल के सत्य सिद्ध होने का प्रश्न ही नहीं उठता। प्रस्तुत अध्याय में सही जन्म-कुण्डली बनाने के लिए विभिन्न-स्थानों के अक्षांश-देशान्तर तथा सभी आवश्यक सारणियाँ दी जा रही हैं। इसमें प्रमुख अधोलिखित हैं।

(१) भारत के विभिन्न स्थानों का अक्षांश-रेखांश व स्टैण्डर्ड टाइम (रेखांश ८२-३० पूर्व) व स्थानीय समय का अंतर।

(२) सांपातिक काल की सारणियाँ।

(३) लग्न सारणियाँ।

(१) भारत के विभिन्न स्थानों का अक्षांश-रेखांश व स्टैण्डर्ड टाइम (रेखांश ८२-३० पूर्व) व स्थानीय समय का अन्तर—

नगर का	अक्षांश		रेखांश		स्टैण्डर्ड अन्तर	
नाम	अंश	कला	अंश	कला	मिनट	सैकण्ड
अकलकोट	१७	३२	७६	१३	—२५	०८
अंकलेश्वर	२१	३९	७२	५९	—३७	५६
अगरतला	२३	५२	९१	१६	+३५	०८
अजमेर	२६	२७	७४	४०	—३१	२०
अम्बाला	३०	२३	७६	४६	—२२	५६
अबोहर	३०	०८	७४	१२	—३३	१२
अनन्तपुर	१४	४०	७७	३५	—१९	४०
अहमदाबाद	२३	०२	७२	३७	—३९	३२
अम्बरनाथ	१९	१२	७३	१०	—३७	२०
अमृतसर	३१	३७	७४	५३	—३०	२८
अमरावती	२०	५७	७७	४५	—१९	००

नगर का नाम	अक्षांश		रेखांश		स्टैण्डर्ड अन्तर	
	अंश	कला	अंश	कला	मिनट	सैकण्ड
अमलनेर	२१	०३	७५	०३	—२६	४८
अयोध्या	२६	४८	८२	१४	—०१	०४
अलवर	२७	३४	७६	३८	—२३	२८
इलाहाबाद	२५	२६	८१	५०	—०२	४०
अलमोड़ा	२६	३७	७६	४०	—११	२०
अलीगढ़	२७	५४	७८	०५	—१८	४०
अलीराजपुर	२२	१८	७४	२१	—३२	३६
अहमदनगर	१६	०५	७४	४४	—३१	०४
अकोला	२०	४३	७७	००	—२२	००
अकोट	२१	०६	७७	०५	—२१	४०
आगरा	२७	१०	७८	०२	—१७	५२
आजमगढ़	२६	०५	८३	१२	+०२	४८
आनन्द	२२	३५	७२	५८	—३८	०८
आबू	२४	३७	७२	४३	—३६	०८
इटारसी	२२	३७	७७	४६	—१८	५६
इन्दौर	२२	४३	७५	५३	—२६	२८
उज्जैन	२३	११	७५	४३	—२७	०८
उमरखेड़	१६	३६	७७	४१	—१६	१६
उंझा	२३	४७	७२	२४	—४	२४
उदयपुर	२४	३५	७३	४२	—३५	१२
ऊटकमण्ड	११	१७	७६	४४	—२३	०४
अमरकोट	२२	४७	७४	५०	—३०	४०
उमरेठ	२२	४२	७३	०८	—३७	२८
एकलिंगजी	२४	४६	७४	४३	—३५	०८

नगर का नाम	अक्षांश अंश	कला	रेखांश अंश	कला	स्टैण्डर्ड अन्तर मिनट	सैकण्ड
एरनाकुलम	०९	५९	७६	१८	—२४	४८
एरनपुरा	२५	०९	७३	०५	—३७	४०
ओखा बन्दर	२२	२८	६९	०५	—५३	४०
ओरछा	२५	२१	७८	३८	—१५	२८
औंध (सतारा)	१७	३२	७४	२०	—३२	४०
औरंगाबाद	१९	५६	७५	१९	—२८	४४
कटक	२०	२८	८५	५४	+१३	३६
कटनी	२३	५०	८०	२३	—०८	२८
कटंगी	२१	२४	७९	५७	—१०	१२
कन्नौज	२७	०१	७९	५६	—१०	१६
कपूरथला	३१	२२	७५	२२	—२८	३२
करनूल	१५	५०	७८	०३	—१७	४८
कमरसद	२२	३४	७२	५४	—३८	२४
करावली	२६	३०	७७	०१	—२१	५६
कराड	१७	१६	७४	१८	—३३	१६
कलकत्ता	२२	३५	८८	२३	+२३	३२
कालीकट	११	१५	७५	४५	—२७	००
कलोल	२३	१४	७२	२८	—४०	०८
काँकरोली	२५	०२	७३	५४	—३४	२४
कांकेर (बस्तर)	२०	१५	८१	३०	—०४	००
कांजीवरम	१२	५०	७९	४३	—११	०८
कानपुर	२६	२७	८०	२१	—०८	३६
कामठी	२१	१०	७८	१२	—१३	१२
कारीकल (मद्रास)	१०	५७	७९	४४	—११	०४

नगर का	अक्षांश		रेखांश		स्टैण्डर्ड अन्तर	
नाम	अंश	कला	अंश	कला	मिनट	सैकण्ड
कालपी	२६	०८	७९	४५	—११	००
काश्मीर	३४	०५	७४	५०	—३०	४०
कासगंज	२७	४८	७८	३९	—१५	२४
किशनगंज (विहार)	२६	०७	८७	५८	+२१	५२
किशनगढ़ (राज०)	२७	१०	७५	२२	—२८	३२
कूचविहार	२६	२०	८९	२५	+२७	४०
कुडप्पा (आन्ध्र)	१४	२८	७८	४९	—१४	४४
कुनूर	११	२०	७६	४८	—२२	४८
कुशलगढ़ (राज०)	२३	०८	७४	२७	—३२	१२
कोइम्बतूर	११	००	७६	५६	—२२	०८
काकीनाडा (आंध्र)	१६	५९	८२	१३	—०१	०८
कोचीन	०९	५८	७६	१५	—२५	००
कोटा (राज०)	२५	११	७५	५०	—२६	४०
कोट्टायम	०९	२५	७६	३२	—२३	२८
कोल्हापुर	१६	४२	७४	१३	—३३	०८
खंडवा	२१	५०	७६	२०	—२४	४०
खड़गपुर	२२	२०	८७	१९	—१९	१६
खंभात	२२	१९	७२	३६	—३९	३६
खरगौन	२१	५०	७५	३७	—२७	३२
खामगाँव	२०	४२	७६	३३	—२३	४८
खुरजा सिटी	२८	१४	७०	५१	—१८	३६
खिड़किआ	२२	११	७६	५१	—२२	३६
खेड़ा	२२	४५	७२	४०	—३९	२०
गंगापुर (जयपुर)	२६	२९	७६	४५	—२३	००

नगर का नाम	अक्षांश		रेखांश		स्टैण्डर्ड अन्तर	
	अंश	कला	अंश	कला	मिनट	सैकण्ड
गंटूर	१६	१७	८०	२७	—०८	१२
गढ़वाल	१६	१४	७७	४८	—१८	४८
गया	२४	४८	८५	०१	+१०	०४
ग्वालियर	२६	१४	७८	१०	—१७	२०
गाजियाबाद	२८	४०	७७	२४	—२०	२४
गाजीपुर	२५	३६	८३	३५	+०४	२०
गिरडीह	२४	११	८६	१८	+१५	१६
गुंटकल	१५	१०	७७	२४	—२०	२४
गुना	२४	३९	७७	१९	—२०	४४
गुलबर्गा	१७	१९	७६	५०	—२२	४०
गोंडा	२७	१०	८१	५७	—०२	१२
गोधरा	२२	४५	७३	३६	—३५	३६
गोरखपुर	२६	४७	८३	२४	+०३	३६
गोआ	१५	२५	७३	४७	—३४	५२
गोहाटी	२६	११	९१	४५	+३७	००
घोघा	२१	४१	७२	१६	—४०	५६
चन्द्रनगर	२२	५१	८८	२१	+२३	२४
चण्डीगढ़	३०	४०	७६	५२	—२२	३२
चन्दौसी	२८	२७	७८	४७	—१४	५२
चान्दा	१९	५६	७८	१७	—१६	५२
चाम्पानेर रोड	२२	३३	७३	२२	—३६	३२
चीरवली (सूरत)	२०	४३	७३	०४	—३७	४४
चीरवली (पंजाब)	२१	२९	७३	५८	—३४	०८
चीरवली (बरार)	२०	२१	७६	१५	—२५	००

नगर का नाम	अक्षांश		रेखांश		स्टैण्डर्ड-अन्तर	
	अंश	कला	अंश	कला	मिनट	सैकण्ड
चित्तौड़गढ़	२४	५४	७४	४२	—३१	१२
चूरू	२८	१७	७४	५८	—३०	०४
चेरापूंजी	२५	१६	९१	४५	+३७	००
चोपड़ा	२१	१५	७५	१८	—२८	४८
छतरपुर	२४	५५	७९	२६	—११	३६
छपरा	२५	४७	८४	४१	+०८	४४
छिंदवाड़ा	२२	०३	७८	५६	—१४	१६
छिबरामऊ	२७	१०	७९	२९	—१२	०४
छोटी सादड़ी	२४	२३	७४	४२	—३१	१२
जखौ	२३	१६	६८	३७	—५५	३२
जगदलपुर	१९	०५	८२	०२	—०१	५२
जगन्नाथपुरी	१९	४८	८५	५०	+१३	२०
जंजीरा	१८	१८	७२	५८	—३८	०८
जथ	१७	०३	७५	१३	—२९	०८
जबलपुर	२३	१०	७९	५८	—१०	०८
जमखण्डी	१६	३०	७५	२०	—२८	४०
जमशेदपुर	२२	४६	८६	१२	+१४	४८
जम्मू	३२	४४	७४	५४	—३०	२४
जयपुर (राज०)	२६	५५	७५	५०	—२६	४०
जलगाँव	२१	०१	७५	३४	—२७	४४
जलगाँव (बरार)	२१	०४	७६	३१	—२३	५६
जालन्धर	३१	१९	७५	३५	—२७	४०
जवहार	१९	५४	७३	१५	—३७	००
जामनगर	२२	२७	७०	०५	—४९	४०

नगर का नाम	अक्षांश अंश	कला	रेखांश अंश	कला	स्टैण्डर्ड अन्तर मिनट	सैकण्ड
जामनेर	२०	४६	७५	४६	—२६	५६
जालना	१९	५१	७५	५३	—२६	२८
जूनागढ़	२१	३१	७०	२७	—४८	१२
झुंझुनू	२८	०८	७५	२४	—२८	२४
जैसलमेर	२६	५५	७०	५४	—४६	२४
जोगबनी	२६	२४	८७	१५	+१९	००
जोधपुर	२६	१८	७३	०२	—३७	५२
जौनपुर	२५	४६	८२	४३	+००	५२
जींद	२९	२१	७६	१७	—२४	५२
झरिया	२३	४५	८६	२४	+१५	३६
झाबुआ	२२	४५	७४	३५	—३१	४०
झालावाड़	२४	३६	७४	०९	—३३	२४
झाँसी	२५	२१	७४	३४	—३१	४४
टोंक	२६	१०	७८	४०	—१४	५६
टूंडला	२७	१३	७८	१३	—१७	०८
टुमकुर	१३	२०	७७	०५	—२१	४०
डाकोर	२२	४५	७३	१०	—३७	२०
डीसा	२४	१४	७२	१३	—४१	०८
डूँगरपुर	२३	५०	७३	४३	—३५	०८
तलेगांव	१८	४२	७३	४०	—३५	२०
तिरुपुर	११	०६	७७	१८	—२०	४८
तारापुर	२२	२८	७२	३९	—३९	२४
त्र्यंबक (नासिक)	१९	५७	७३	३२	—३५	५२
त्रिचिनापल्ली	१०	५०	७८	४२	—१५	१२

नगर का नाम	अक्षांश अंश	अक्षांश कला	रेखांश अंश	रेखांश कला	स्टैण्डर्ड अन्तर मिनट	स्टैण्डर्ड अन्तर सैकण्ड
त्रिवेन्द्रम	०८	३०	७६	५७	—२२	१२
तेजपुर	२६	३८	९२	५२	+४१	२८
दमण	२०	२५	७२	५०	—३८	४०
दरभंगा	२६	१०	८५	५५	+१३	४०
द्वारिका	२२	१६	६८	५७	—५४	१२
दांता	२४	११	७२	४७	—३८	५२
दतिया	२५	३९	७८	२७	—१६	१२
दार्जिलिंग	२७	०३	८८	१६	+२३	०४
दावणगिरि	१४	३०	७५	५६	—२६	१
दमोह	२३	४९	७९	२६	—१२	१
डिब्रूगढ़	२७	२९	९४	५६	+४९	४४
दिल्ली	२८	३८	७७	१७	—२०	५
दुर्ग	२१	११	८१	१७	—०४	५
देलवाड़ा	२४	३८	७२	४४	—३९	०
देवगढ़ (खारिआ)	२२	४२	७३	५३	—३४	२
देवगढ़ (रत्नागिरि)	१६	२१	७३	२४	—३६	२
देवास	२२	५८	७६	०६	—२५	३
देहरादून	३०	१९	७८	०४	—१७	४४
दौलताबाद	१९	५७	७५	१३	—२९	०८
धनबाद	२३	४७	८६	२४	+१५	३
धनुषकोटि	०९	१२	७९	२५	—१२	२०
धमतरी	२०	४२	८१	३४	—०३	४४
धर्मज	२२	२४	७२	४८	—३८	४८
धरमपुर	२०	३२	७३	१३	—३७	०८

नगर का नाम	अक्षांश अंश	अक्षांश कला	रेखांश अंश	रेखांश कला	स्टैण्डर्ड अन्तर मिनट	स्टैण्डर्ड अन्तर सैकण्ड
धरमाबाद	१८	५४	७७	५१	—१८	३६
धारवाड़	१५	२७	७५	००	—३०	००
धामणगाँव	२०	४७	७८	०८	—१७	२८
धूलिया	२०	५४	७४	४७	—३०	५२
धौलपुर (राज०)	२६	४२	७७	५३	—१८	२८
धोलेरा	२२	१५	७२	१२	—४१	१२
नड़ियाद	२२	४१	७२	५२	—३८	३२
नरसिंहगढ़	२३	४१	७७	०५	—२१	४०
नलीआ	२३	१६	६८	४९	—५४	४४
नवसारी	२०	५६	७२	५५	—३८	२०
नवलगढ़	२७	५१	७५	१६	—२८	५६
नसीराबाद	२६	१८	७४	४६	—३०	५६
नागपुर	२१	०९	७९	००	—१३	३६
नागौर	२७	११	७३	४२	—३५	१२
नाथद्वारा	२४	५६	७३	४८	—३४	४८
नांदुरा	२०	५०	७६	२७	—२४	१२
नाभा	३०	२२	७६	१०	—२५	२०
नांदेड़	१९	०९	७७	२०	—२०	४०
नालन्दा	२५	०९	८५	२४	+११	३६
नासिक	२०	००	७३	४७	—३४	५२
निकोबार	०८	००	९४	००	+४६	००
निज़ामाबाद	१८	४०	७८	०६	—१७	३६
नीमच	२४	२८	७४	५१	—३०	३६
नैल्लोर	१४	२७	८०	००	—१०	००

नगर का नाम	अक्षांश		रेखांश		स्टैण्डर्ड अन्तर	
	अंश	कला	अंश	कला	मिनट	सैकण्ड
नैनीताल	२९	२५	७९	२७	—१२	१२
पंचमढ़ी	२२	२७	७८	२५	—१६	२०
पनवेल	१९	००	७३	०७	—३७	३२
पटना	२५	३५	८५	१५	+११	००
पटौदी	२८	१९	७६	४६	—२२	४६
पठानकोट	३२	१८	७५	४२	—२७	१२
पंढरपुर	१७	४०	७५	१९	—२८	४४
पटियाला	३०	२२	७६	२५	—२४	२०
परभणी	१९	१५	७६	४७	—२२	५२
प्रयाग	२५	२५	८१	५३	—०२	२८
पाटण	२३	५२	७२	०७	—४१	३२
पानीपत	२९	२७	७६	५८	—२२	०८
पारसनाथ	२३	५७	८६	०८	+१४	३२
पारडी	२०	३१	७२	५७	—३८	१२
पालनपुर	२४	१०	७२	२८	—४०	०४
पालघाट	१०	४६	७६	३९	—२३	२४
पालीताना	२१	३१	७१	५०	—४२	४०
पाली	२५	४७	७३	१९	—३६	४४
पिलानी	२८	२२	७५	३५	—२७	४०
पूना-सिटी	१८	३०	७३	५२	—३४	३२
पुलगाँव	२०	४४	७८	१९	—१६	४४
पुसद	१९	५४	७७	३५	+१९	४०
पुनाका (भूटान)	२७	३५	८९	५०	—२९	२०
पेटलाद	२२	२९	७२	४८	—३८	४८

नगर का	अक्षांश		रेखांश		स्टैण्डर्ड अन्तर	
नाम	अंश	कला	अंश	कला	मिनट	सैकण्ड
पाण्डिचेरी	११	५६	७६	४८	—१०	४८
पोर्टब्लेअर(अंडमान)	११	४०	९२	४६	+४१	०४
फतेहगढ़	२७	२३	७६	३५	—११	४०
फलटन	१८	००	७४	२५	—३२	२०
फतेहपुर सीकरी	२७	०६	७७	४०	—१९	२०
फतेहपुर (राज०)	२८	००	७४	५९	—३०	०४
फरीदकोट	३०	४०	७४	४५	—३१	००
फर्रुखाबाद	२७	०३	७६	३७	—११	३२
फलोदी	२७	०६	७२	२२	—४०	३२
फालना	२५	०५	७२	५९	—३८	०४
फीरोजाबाद	२७	०६	७८	२१	—१६	३६
फीरोजपुर	३०	५७	७४	३६	—३१	३६
फैजाबाद	२६	४७	८२	०८	—०१	२८
बघोली	२१	३१	७६	५९	—१०	०४
बडनेरा	२०	५२	७७	४३	—१९	०८
बदरीनाथ	३०	४०	७६	३०	—१२	००
बनारस	२५	१९	८३	००	+०२	००
बर्दवान	२३	१६	८७	५२	+२१	१८
बरेली	२८	२२	७६	२४	—१२	२४
बाँदा	२५	२८	८०	१२	—०९	१२
बारडोली	२१	०७	७३	०७	—३७	३२
बाराबंकी	२६	५५	८१	१०	—०५	२०
बारामती	१८	०९	७४	३५	—३१	४०
बालाघाट	२१	४८	८०	१२	—०९	१२

नगर का नाम	अक्षांश अंश	अक्षांश कला	रेखांश अंश	रेखांश कला	स्टैंडर्ड अन्तर मिनट	स्टैंडर्ड अन्तर सैकण्ड
बालापुर	२०	४२	७६	४५	—२३	००
ब्यावर	२६	०६	७४	१९	—३२	४४
बिलासपुर	२२	०५	८२	१०	—०१	२०
बिहारशरीफ	२५	०२	८५	३८	+१२	३२
बिजनौर	२९	२७	७८	३०	—१६	००
बीजापुर	१६	५०	७५	४२	—२७	१२
बीकानीर	२८	०१	७३	१९	—३६	४४
बुद्ध गया	२४	४२	८४	५९	—०९	५६
बुलढाना	२०	३२	७६	११	—२५	१६
बुलन्दशहर	२८	२४	७७	५१	—१८	३६
बूँदी	२५	२७	७५	३८	—२७	२८
बेंगलोर	१२	५८	७७	३५	—१९	४०
बेलगाँव	१५	५२	७४	३०	—३२	००
बोदवड़	२०	५४	७६	००	—२६	००
भंडारा	२१	०९	७९	३९	—११	२४
भरतपुर	२७	१५	७७	३०	—२०	००
भड़ोंच	२१	४१	७३	००	—३८	००
भटिंडा	३०	११	७४	५७	—३०	१२
भागलपुर	२५	१४	८६	५९	—१७	५६
भिलाई	२१	११	८१	२०	—०४	४०
भिवंडी (थाणा)	१९	२०	७३	०५	—३७	४०
भिवानी	२८	४८	७६	०९	—२५	२४
भीनमाल	२५	००	७३	१७	—३६	५२
भीलवाड़ा	२५	२१	७४	३८	—३१	२८
		३६				

नगर का नाम	अक्षांश		रेखांश		स्टैण्डर्ड अन्तर	
	अंश	कला	अंश	कला	मिनट	सैकण्ड
भुवनेश्वर	२०	२८	८५	५४	+१३	३६
भुसावल	२१	०२	७५	४७	—२६	५२
भुज	२३	१५	६९	४०	—५१	२०
भोपाल	२३	१६	७७	२३	—२०	२८
मंगरूलपीर	२०	१९	७७	२०	—२०	४०
मंदसौर	२४	०४	७५	०५	—२९	४०
मंडी	३१	४०	७६	५५	—२२	२०
मछलीपट्टन	१६	०९	८१	०८	—०५	२८
मणिपुर	२४	५०	९३	५८	+४५	५२
मथुरा	२७	२८	७०	४१	—१९	१६
मदुरै	०९	५५	७८	०८	—१७	२८
मद्रास	१३	०६	८०	१५	—०९	००
मनमाड जंकशन	२०	१५	७४	२६	—३२	१६
मलकापुर	२०	५३	७६	१२	—२५	१२
मरकारा (कुर्ग)	१२	२५	७५	४३	—२७	०८
मसूरी	३०	२७	७८	०६	—१७	३६
महाबलेश्वर	१७	५६	७३	४०	—३५	२०
महेश्वर	२२	११	७५	३७	—२७	३२
महेमदावाद	२२	५०	७२	४५	—३९	००
महसाना	२३	३६	७२	२५	—४०	२०
महबूबनगर	१६	४५	७८	००	—१८	००
मांडवी	२२	५१	६९	२०	—५२	४०
मालेगाँव	२०	३३	७४	३०	—३२	००
मिरज	१६	४९	७४	३८	—३१	२८

नगर का नाम	अक्षांश अंश	अक्षांश कला	रेखांश अंश	रेखांश कला	स्टैण्डर्ड अन्तर मिनट	स्टैण्डर्ड अन्तर सैकण्ड
मिर्जापुर	२५	१०	८२	३३	—००	१२
मुर्तिजापुर	२०	४४	७७	२२	—२०	३२
मुधोल (कर्नाटक)	१६	२०	७५	१७	—२८	५२
मुर्शिदाबाद	२४	१२	८८	१८	+२३	१२
मुम्बई	१८	५५	७२	५०	—३८	४०
मेंगलोर	१२	५३	७४	५१	—३०	३६
मैसूर	१२	१९	७६	४०	—२३	२०
मैनपुरी	२७	१३	७९	०२	—१३	५२
मुगलसराय	२५	१७	८३	०६	+०२	२४
मुरादाबाद	२८	५०	७८	५०	—१४	४०
यवतमाल	२०	२३	७८	०८	—१७	२८
रतलाम	२३	१९	७५	०३	—२९	४८
रत्नागिरि	१७	००	७३	१९	—३६	४४
राँची	२३	२०	८५	२०	+११	२०
राजमहेन्द्री	१७	००	८१	४६	—०२	५६
राजनन्दगाँव	२१	०६	८१	०३	—०५	४८
राजपीपला	२१	५२	७३	३०	—३६	००
राजपुर (कोंकण)	१६	३९	७३	३१	—३५	५६
राजिम	२०	५८	८१	५३	—०२	२८
रानीगंज	२३	३७	८७	०६	+१८	२४
रानीवाड़ा	२४	४४	७२	१५	—४१	००
रामेश्वरम्	०९	१७	७९	१८	—१२	४८
रायबरेली	२६	१४	८१	१३	—०५	०८
रायचूर	१६	२५	७७	२१	—२०	३६

नगर का नाम	अक्षांश		रेखांश		स्टैण्डर्ड अन्तर	
	अंश	कला	अंश	कला	मिनट	सैकण्ड
रायपुर	२१	१५	८१	३८	—०३	२८
रीवाँ	२४	३२	८१	१७	—०४	५२
लखनऊ	२६	५१	८०	५५	—०६	२०
ललितपुर	२४	४२	७८	२५	—१६	२०
लश्कर	२६	११	७८	७८	—१७	२८
लूनावाड़ा	२३	०८	७३	३७	—३५	३२
लुधियाना	३०	५६	७५	५२	—२६	३२
लेह	३४	१०	७०	३५	—१९	४०
लोनावला (पूना)	१८	४४	७३	२४	—३६	२४
वृन्दावन	२७	३६	७७	४२	—१९	१२
वड़ोदा	२२	१८	७३	१३	—३७	०८
वर्धा	२०	४५	७८	३६	—१५	३६
बलसाड़	२०	३७	७२	५६	—३८	२४
बाँसवाड़ा	२३	३३	७४	२६	—३२	१६
विजयनगर	२४	००	७३	१७	—३६	५२
विजयवाड़ा	१६	३३	८०	३६	—०७	३६
विजयनगरम्	१८	०७	८३	२४	+०३	३६
बीजापुर	२३	३४	७२	४५	—३९	००
विशाखापट्टम	१७	४२	८३	१८	+०३	१२
वीरमगाँम	२३	०८	७२	०३	—४१	४८
वेल्लोर	१२	५५	७९	०८	—१३	२८
शाहजहानपुर	२७	५४	७९	५७	—१०	१२
शाजापुर	२३	२६	७६	१६	—२४	५६
शाहपुर	२७	३५	८०	४०	—०७	२०

नगर का नाम	अक्षांश		रेखांश		स्टैण्डर्ड अन्तर	
	अंश	कला	अंश	कला	मिनट	सैंकण्ड
शिकोहाबाद	२७	०६	७८	३८	—१५	२८
शिलांग	२५	३४	९१	५४	+३७	३६
शिवपुरी	२५	२६	७७	३९	—१९	२४
शेगाँव (अकोला)	२०	४७	७६	४१	—२३	१६
श्रीकाकुलम्	१८	१८	८३	५७	+०५	४८
श्रीगंगानगर	२९	५६	७३	५२	—३४	३२
श्रीगोंडा	१८	३७	७४	४२	—३१	१२
श्रीनगर	३४	०५	७४	५०	—३०	४०
सचीन	२१	०५	७२	५२	—३८	३२
सम्बलपुर	२१	२८	८३	५९	+०५	५६
सतारा	१७	४२	७४	००	—३४	००
सवाई माधोपुर	२६	००	७६	२३	—२४	२८
सागर	२३	५०	७८	४५	—१५	००
साँगली	१६	५२	७४	३४	—३१	४९
सादड़ी (मारवाड़)	२५	०५	७३	२६	—३६	१६
साबरमती	२३	०५	७२	३८	—३९	०८
सारंगपुर	२३	३४	७६	२८	—२४	०८
सालेम	११	३९	७८	०९	—१७	२४
सावंतवाड़ी	१५	५४	७३	५०	—३४	४०
सहारनपुर	२९	५८	७७	३२	—१९	५२
सिद्धपुर	२३	५५	७२	२३	—४०	२८
सीकर	२७	३७	७५	०९	—२९	२४
सीतापुर	२७	३६	८०	४०	—०७	२०
शिमला	३१	०६	७७	१०	—२१	२०
		४०				

नगर का	अक्षांश		रेखांश		स्टैण्डर्ड अन्तर	
नाम	अंश	कला	अंश	कला	मिनट	सैकण्ड
सिरोही	२४	५३	७२	५१	—३८	३६
सूरत	२१	१२	७२	५०	—३८	४०
सुलतानपुर	२६	१५	८२	०४	—०१	४४
सोनपुर	२०	५१	८३	५५	+०५	४०
सोलन	३०	५७	७७	०५	—२१	४०
शोलापुर	१७	४०	७५	५५	—२६	२०
हरिद्वार	२९	५८	७८	०८	—१७	२८
हरदा	२२	२१	७७	०६	—२१	३६
हाजीपुर	२५	४१	८५	१४	+१०	५६
हाथरस	२७	३६	७८	०६	—१७	३६
हापुड़	२८	४५	७७	४६	—१८	३६
हिंगणघाट	२०	३४	७८	५०	—१४	४०
हिंगोली	१९	४३	७७	१०	—२१	२०
हिम्मतनगर	२३	३५	७२	५८	—३८	०८
हिसार	२९	१०	७५	४४	—२७	०४
हुबली (कर्नाटक)	१५	२०	७५	०८	—२९	२८
हैदराबाद (आंध्र)	१७	२७	७८	३०	—१६	००
होशंगाबाद	२२	४६	७७	४३	—१९	०८
होशियारपुर	३१	३२	७५	५५	—२६	२०

(२) सांपातिक काल की सारणियाँ

अर्वाचीन पद्धति से जन्म-कुण्डली बनाने में सांपातिक काल की सारणियाँ आवश्यक हैं। सांपातिक काल को नाक्षत्र काल भी कहते हैं। अंग्रेजी में इसे Sideral time कहते हैं। प्रत्येक अच्छे पञ्चाङ्ग में प्रतिदिन का सांपातिक काल दिया रहता है। उदाहरणार्थ जन्मभूमि पञ्चाङ्ग, मुम्बई समाचार का पञ्चाङ्ग इत्यादि। जन्मभूमि प्रकाशन मन्दिर, बम्बई से प्रकाशित, ज्योतिष शास्त्र प्रवेश तथा पञ्चाङ्गमार्ग दर्शिका में भी पिछले अनेक वर्षों के सांपातिक काल कोष्टक दिए गए हैं। उक्त सांपातिक काल पूर्व रेखांश ७२ का है। अतः विश्व के किसी भी भाग में उसका उपयोग करने के लिए प्रत्येक रेखांश $\frac{२}{३}$ सैकण्ड के प्रमाण से संस्कार करना पड़ता है। रेखांश ७२ से पूर्व की तरफ अर्थात् अधिक हो तो संस्कार अन्तर करना चाहिए और पश्चिम की तरफ अर्थात् कम हो तो संस्कार योग करना चाहिए।

(३) लग्न सारणियाँ

जन्म-कुण्डली बनाने में प्रत्येक स्थान की लग्न-सारणी आवश्यक है। अंग्रेजी में इसे Table of Ascendants कहते हैं। प्रत्येक स्थान की लग्न सारणी ज्ञात करने के लिए Tables of Ascendatants सम्बन्धी पुस्तकें अलग से प्राप्त हैं।

जन्म कुण्डली बनाना

जन्म-कुण्डली आकाश का उस समय का नक्शा है, जिस समय कोई मनुष्य उत्पन्न होता है।

जन्म-कुण्डली बनाने के लिए सभी आवश्यक सारणियाँ चतुर्थ प्रकरण में दी जा चुकी हैं। प्रस्तुत प्रकरण में सही जन्म-कुण्डली बनाने की सरल विधि दी जा रही है। किसी भी व्यक्ति की जन्म-कुण्डली बनाने के लिए निम्नलिखित विवरण आवश्यक हैं :—

(१) जन्म-तिथि (२) जन्म-समय और (३) जन्म-स्थान।

कुण्डली बनाते समय सर्वप्रथम जन्म-स्थान के स्टैण्डर्ड टाइम से लोकल टाइम (स्थानीय समय) ज्ञात करना चाहिए। उदाहरणार्थ—एक व्यक्ति का जन्म ५-८-१९३२ को प्रातः १० बज कर १३ मिनट पर फलोदी में हुआ। फलोदी का स्थानीय समय ज्ञात करने के लिए हमें फलोदी के 'अक्षांश व रेखांश तथा स्टैण्डर्ड टाइम व स्थानीय समय का अन्तर' देखना होगा। इसके लिए पृष्ठ संख्या ३५ देखिए। फलोदी के अक्षांश २७°-०९' तथा रेखांश ७२°-२२' हैं। स्टैण्डर्ड टाइम व लोकल टाइम में अन्तर ४० मिनट ३२ सैकण्ड है। अब हम फलोदी का स्थानीय समय ज्ञात कर सकते हैं :—

घ०	मि०	सैं०	
१०	१३	०	स्टैण्डर्ड टाइम।
००	४०	३२	फलोदी का अन्तर।
९	३२	२८	फलोदी का स्थानीय समय।

स्थानीय समय में जन्म का सांपातिक काल जोड़ देना चाहिए। ५-८-१९३२ को सांपातिक काल २० घ० ५३ मि० १६ सैंकण्ड है।

घ०	मि०	सैं०	
९	३२	२८	स्थानीय समय।
+२०	५३	१६	सांपातिक काल।
३०	२५	४४	

इसमें एक घण्टे में १० सेकण्ड के अनुसार से सांपातिक काल की गति जोड़नी चाहिए। इसे सांपातिक काल का करैक्शन कहते हैं। जातक का जन्म १० बजकर १३ मिनट प्रातः में हुआ है। अतः १० घण्टों के १०० सैकण्ड व १३ मिनट के लगभग २ हुए। योग १०२ सैकण्ड = १ मिनट ३२ सैकण्ड हुए। इसे जोड़ देना चाहिए।

घ०	मि०	सैं०
३०	२५	४४
+००	१	४२ सांपातिक काल का करैक्शन।
३०	२७	२६ आर० ए० एम० सी०
२४	००	०० अगर कुल योग २४ घण्टों से अधिक हो तो २४ बाकी निकाल देना चाहिए
६	२७	२६ आर० ए० एम० सी०।



जातक का जन्म फलोदी में हुआ है। फलोदी के अक्षांश २७° ०९' हैं। अतः फलोदी के लिए २७° की लग्न सारणी देखिए।

उसमें यह देखिये कि ६-२७-२६ अङ्क कहाँ हैं ? उक्त अङ्क कन्या लग्न के १२ और १३ के बीच हैं । अतः जातक का जन्म कन्या लग्न के १२ अंश पर हुआ ।

जहाँ पर लग्न लिखा है, वह कुण्डली का प्रथम भाव है, उसमें ६ (कन्या) लिख दीजिए । तत्पश्चात् क्रमशः ७, ८, ९, इत्यादि लिख दीजिए । अब उस दिन का कोई अच्छा पञ्चांग—लाहिरी, राफेल या जन्म-भूमि इत्यादि लीजिये और उस दिन के ग्रहों की स्थिति जन्म-कुण्डली में भर दीजिए । उदाहरणार्थ ५-८-१९३२ को ग्रहों की स्थिति निम्न प्रकार से थी :—

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	वृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	३	४	२	४	४	२	९	१०	४
अंश	१९	२५	७	८	५	१०	७	२५	२५

जातक की सही जन्म कुण्डली



नोटः—(१) जन्म कुण्डली बनाते समय रेलवे टाइम-टेबल के अनुसार समय लिखा जाता है । यथा दोपहर के १ बजे को १३ पी. एम. २ बजे को १४ पी. एम. इत्यादि कहते हैं ।

लग्न सारणी देखते समय निम्नलिखित का ध्यान रखना चाहिए। यथा—फलोदी के अक्षांश २७°—०९' हैं तो छोड़ देना चाहिए और २७ अंश की लग्न सारणी ही देखनी चाहिए। अगर ०९' के स्थान पर ३०' कला होती अथवा ३०' कला से ऊपर होती तो फिर २७ के स्थान पर २८ अंश की लग्न सारणी को देखा जाता।

विंशोत्तरी महादशा निकालना

जन्म-कुण्डली तैयार होने के पश्चात् नक्षत्र द्वारा महादशा निकालने का तरीका बताया जाता है। जन्म के समय चन्द्र जिस नक्षत्र में हो उसी नक्षत्र के अनुसार जन्म के समय महादशा होती है। किस नक्षत्र में चन्द्र होने से किस महादशा में जन्म होता है यह निम्न प्रकार से है :—

१. अश्विनी	१०. मघा	१९. मूल	—केतु
२. भरणी	११. पूर्वाफाल्गुनी	२०. पूर्वाषाढ़ा	—शुक्र
३. कृत्तिका	१२. उत्तराफाल्गुनी	२१. उत्तराषाढ़ा	—सूर्य
४. रोहिणी	१३. हस्त	२२. श्रवण	—चन्द्र
५. मृगशिरा	१४. चित्रा	२३. धनिष्ठा	—मंगल
६. आर्द्रा	१५. स्वाति	२४. शतभिषा	—राहु
७. पुनर्वसु	१६. विशाखा	२५. पूर्वाभाद्रपद	—गुरु
८. पुष्य	१७. अनुराधा	२६. उत्तराभाद्रपद	—शनि
९. आश्लेषा	१८. ज्येष्ठा	२७. रेवती	—बुध

यदि किसी व्यक्ति का जन्म अश्विनी, मघा या मूल नक्षत्र में हुआ हो तो केतु की महादशा में जन्म होता है। यदि किसी का भरणी, पूर्वाफाल्गुनी या पूर्वाषाढ़ा में जन्म हो तो शुक्र महादशा में जन्म होता है। इसी प्रकार क्रमशः समझना चाहिए। उपर्युक्त जन्म-कुण्डली के जातक के जन्म समय में चन्द्र पूर्वा-

फाल्गुनी नक्षत्र में था। अतः जातक का जन्म शुक्र महादशा में हुआ।

प्रत्येक ग्रह की महादशा निम्नांकित वर्षों की होती है :—

सूर्य	—	६ वर्ष
चन्द्र	—	१० वर्ष
मंगल	—	७ वर्ष
राहु	—	१८ वर्ष
गुरु	—	१६ वर्ष
शनि	—	१९ वर्ष
बुध	—	१७ वर्ष
केतु	—	७ वर्ष
शुक्र	—	२० वर्ष

उदाहरणार्थ यदि किसी व्यक्ति का जन्म ठीक उसी समय हुआ हो जब मघा नक्षत्र समाप्त हो रहा हो और पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र प्रारम्भ हो रहा हो तो पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के प्रारम्भिक बिन्दु पर चन्द्र की स्थिति होने के कारण शुक्र की महादशा २० वर्ष की होगी। जब वह व्यक्ति २० वर्ष का होगा तब ६ वर्ष की सूर्य महादशा प्रवेश करेगी। २६ वर्ष पूर्ण होने पर १० वर्ष की चन्द्र महादशा प्रवेश करेगी। यही क्रम चलता रहेगा। जन्म के समय चन्द्र किसी नक्षत्र के ठीक प्रारम्भिक बिन्दु पर है, ऐसा प्रायः बहुत कम होता है। अगर नक्षत्र के मध्य में हो तो फिर कितनी महादशा जन्म के समय बाकी रहेगी, इसे निकालने के लिए यह तरीका है। माना, आज प्रातः ६ बजे पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र प्रारम्भ हुआ तो कल ६ बजे तक पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र रहेगा। इस प्रकार पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र का मान २४ घण्टे अथवा ६० घड़ी हुआ। अब अगर किसी व्यक्ति का जन्म दिन के १२ बजे हो तो

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के ६ घण्टे अर्थात् १५ घड़ी व्यतीत हो जाती हैं और १८ घण्टे अर्थात् ४५ घड़ी बाकी रहती हैं। जातक का जन्म पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में हुआ। अतः शुक्र महादशा में जन्म हुआ जो २० वर्ष की होती है। उसमें से १५/६० व्यतीत हो चुका था और ४५/६० अवशिष्ट था। अतः शुक्र महादशा के २४ वर्षों में से २० × १५/६० = ५ वर्ष व्यतीत हो चुके थे और २० × ४५/६० = १५ वर्ष बाकी रहे। इसे इस प्रकार भी लिखते हैं :—

भुक्त—शुक्र महादशा-५ वर्ष (जो जन्म के पहले व्यतीत हो चुकी है)

भोग्य—शुक्र महादशा—१५ वर्ष (जो इस जीवन में भोगनी है।

जन्म के समय अगर किसी नक्षत्र का थोड़ा भाग बीत चुका हो और थोड़ा भाग अवशिष्ट हो तो उसी की भुक्त-भोग्य महादशा निकालनी पड़ती है। शेष महादशाएँ पूर्ण रूप से भोग्य होती हैं।

ग्रहों की अन्तर्दशाएँ

सूर्य महादशा — ६ वर्ष

अन्तर्दशाएँ	वर्ष	मास	दिन
सूर्य	०	३	१८
चन्द्र	०	६	०
मंगल	०	४	६
राहु	०	१०	२४
बृहस्पति	०	९	१८
शनि	०	१०	६
केतु	०	४	६
शुक्र	१	०	०
कुल योग	६	०	०

चन्द्र महादशा—१० वर्ष

अन्तर्दशाएँ	वर्ष	मास	दिन
चन्द्र	०	१०	०
मंगल	०	७	०
राहु	१	६	०
बृहस्पति	१	४	०
शनि	१	७	०
बुध	१	५	०
केतु	०	७	०
शुक्र	१	८	०
सूर्य	०	६	०
कुल वर्ष	१०	०	०

मंगल महादशा—७ वर्ष

अन्तर्दशाएँ	वर्ष	मास	दिन
मंगल	१	४	२७
राहु	१	०	१८
बृहस्पति	०	११	६
शनि	१	१	६
बुध	०	११	२७
केतु	०	४	२७
शुक्र	१	२	०
सूर्य	०	४	६
चन्द्र	०	७	०
कुल वर्ष	७	०	०

राहु महादशा—१८ वर्ष

अन्तर्दशाएँ	वर्ष	मास	दिन
राहु	२	८	१२
बृहस्पति	२	४	२४
शनि	२	१०	६
बुध	२	६	१८
केतु	१	०	१८
शुक्र	३	०	०
सूर्य	०	१०	२४
चन्द्र	१	६	०
मंगल	१	०	१८
कुल वर्ष	१८	०	०

बृहस्पति महादशा—वर्ष १६

अन्तर्दशाएँ	वर्ष	मास	दिन
बृहस्पति	२	१	१८
शनि	२	६	१२
बुध	२	३	६
केतु	०	११	६
शुक्र	२	८	०
सूर्य	०	९	१८
चन्द्र	१	४	०
मंगल	१	११	६
राहु	२	४	२४
कुल वर्ष	१६	०	०

शनि महादशा—१९ वर्ष

अन्तर्दशाएँ	वर्ष	मास	दिन
शनि	३	०	३
बुध	२	८	९
केतु	१	१	९
शुक्र	३	२	०
सूर्य	०	११	१२
चन्द्र	१	७	०
मंगल	१	१	९
राहु	२	१०	६
बृहस्पति	२	६	१२
कुल वर्ष	१९	०	०

बुध महादशा—१७ वर्ष

अन्तर्दशाएँ	वर्ष	मास	दिन
बुध	२	४	२७
केतु	०	११	२७
शुक्र	२	१०	०
सूर्य	०	१०	६
चन्द्र	१	५	०
मंगल	०	११	२७
राहु	२	६	१८
बृहस्पति	२	३	६
शनि	२	८	९
कुल वर्ष	१७	०	०

केतु महादशा—७ वर्ष

अन्तर्दशाएँ	वर्ष	मास	दिन
केतु	०	४	२७
शुक्र	१	२	०
सूर्य	०	४	६
चन्द्र	०	७	०
मंगल	०	४	२७
राहु	१	०	१८
बृहस्पति	१	११	६
शनि	१	१	९
बुध	०	११	२७
कुल वर्ष	७	०	०

शुक्र महादशा—२० वर्ष

अन्तर्दशाएँ	वर्ष	मास	दिन
शुक्र	३	४	०
सूर्य	१	०	०
चन्द्र	१	८	०
मंगल	१	२	०
राहु	३	०	०
बृहस्पति	२	८	०
शनि	३	२	०
बुध	२	१०	०
केतु	१	२	०
कुल वर्ष	२०	०	०

कुण्डली-भावदर्शन

कुण्डली में कुल बारह भाव होते हैं।

केन्द्र—प्रथम, चतुर्थ, सप्तम और दशम भाव केन्द्र कहलाते हैं।

त्रिकोण—पंचम तथा नवम भाव त्रिकोण कहलाते हैं।

पणफर—द्वितीय, पंचम, अष्टम तथा एकादश भाव पणफर कहलाते हैं।



आपोक्लिम—तृतीय, षष्ठ, नवम तथा द्वादश भाव आपोक्लिम कहलाते है।

त्रिक—षष्ठ, अष्टम तथा द्वादश भाव त्रिक कहलाते हैं तथा इन्हें दुःस्थान भी कहते हैं। अंग्रेजी में इन्हे Evil Houses कहते हैं।

उपचय—तृतीय, षष्ठ, दशम व एकादश भाव उपचय कहलाते हैं। अवशिष्ट भावों को अनुपचय कहते हैं।

किस भाव से क्या देखा जाता है ?

प्रथम भाव—शारीरिक गठन, व्यवसाय।

द्वितीय भाव—आर्थिक स्थिति, पारिवारिक सुख, दाहिनी आँख।

तृतीय भाव—पराक्रम, भ्रातृ-सुख, विदेशयात्रा, दाहिना हाथ व दाहिना कान।

चतुर्थ भाव—जमीन-जायदाद, मकान-सुख, वाहन-सुख मातृ-सुख, मानसिक शान्ति, मित्र, भागीदारी, स्थानान्तर।

पंचम भाव—विद्या-बुद्धि, सन्तान, सट्टा या लाटरी।

षष्ठ भाव—शत्रु, रोग, मुकदमेबाजी, दाहिना पाँव।

सप्तम भाव—वैवाहिक-जीवन, स्त्री का स्वास्थ्य।

अष्टम भाव—आयु, जेल, वाम पैर।

नवम भाव—भाग्य, धर्म, धन-सम्पत्ति, आकस्मिक लाभ।

दशम भाव—राज्येश, पदोन्नति, उच्च पद प्राप्ति, सम्मान प्रसिद्धि, पितृ-सुख, हृदय।

एकादश भाव—आय, वाम हाथ व बाम कान।

द्वादश भाव—व्यय, हानि, ऋण, यात्राएँ, वाम नेत्र।

कुण्डली का अध्ययन करते समय ध्यान में रखने योग्य कुछ आवश्यक नियम

कुण्डली का अध्ययन बड़ी ही शान्ति से व सावधानीपूर्वक करना चाहिए। शीघ्रता में किसी एक ही ग्रह को देख कर फल नहीं कह देना चाहिए। निम्नांकित नियमों को ध्यान में रखते हुए कुण्डली का अवलोकन करना चाहिए :—

(१) जिस भाव में जो राशि हो, उस राशि का अधिपति ही उस भाव का अधिपति या भावेश कहलाता है।

(२) यदि किसी भाव का अधिपति अपने ही भाव में स्थित हो तो वह शुभ फलदायक होता है।

(३) किसी भाव का पूर्ण फल जातक को तभी प्राप्त होता

है जब भाव, भावेश और कारक तीनों बलवान होते हैं। साथ ही लग्न भाव भी प्रबल हो तो विशेष शुभ फल प्राप्त होता है।

(४) केन्द्र व त्रिकोण के अधिपति ग्रह प्रबल होते हैं।

(५) षष्ठ, अष्टम व द्वादश अर्थात् त्रिक भवनों के अधिपति ग्रह अशुभ होते हैं।

(६) त्रिक भवनों के अधिपति ग्रह जहाँ भी बैठते हैं उस भाव के फल को हानि पहुँचाते हैं।

(७) केन्द्र व त्रिकोण के अधिपति ग्रह षष्ठ, अष्टम व द्वादश भावों में जाने से निर्बल हो जाते हैं।

(८) ग्रहों की मित्रता का भी विशेष प्रभाव पड़ता है। फल-कथन के समय ग्रहों की मित्रता-शत्रुता का भी ध्यान रखना चाहिए।

(९) उच्च के ग्रह कुण्डली में सर्वदा अच्छा फल देते हैं। नीच राशि गत ग्रह दुर्बल होते हैं।

(१०) स्वयं के कारक-भवन में स्थित ग्रह प्रबल होते हैं।

(११) २९ और ० अंश के ग्रह निष्प्रभाव होते हैं।

(१२) किसी भाव का अध्ययन करते समय उस भाव में स्थित राशि, ग्रह, भावेश, कारक व ग्रहों की दृष्टि इत्यादि का ध्यान रखना आवश्यक है।

(१३) शनि ग्रह और शनि की राशियाँ, मकर तथा कुम्भ अशुभ होती हैं। ग्रह तथा मकर व कुम्भ राशियाँ कुण्डली में जिस भाव से सम्बन्धित होती हैं, उस भाव को अशुभ फल मिलता है।

प्रथम भाव

प्रथम भाव (लग्न) जन्म-कुण्डली में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाव है। प्रथम भाव ही समस्त भावों का ध्रुव केन्द्र है। लग्नेश (प्रथम भाव का अधिपति) ही कुण्डली का अधिपति माना जाता है।

प्रथम भाव से जातक का शारीरिक गठन, आकृति, स्वास्थ्य, पुष्टता, कृशता व व्यवसाय आदि का अध्ययन किया जाता है।

इस भाव का अध्ययन करने से पूर्व निम्नलिखित तथ्यों का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन करना चाहिए—

(१) प्रथम भाव और उसकी राशि।

(२) प्रथम भाव का अधिपति और कुण्डली में उसकी स्थिति।

(३) प्रथम भाव में स्थित ग्रह।

(४) प्रथम भाव पर ग्रहों की दृष्टि।

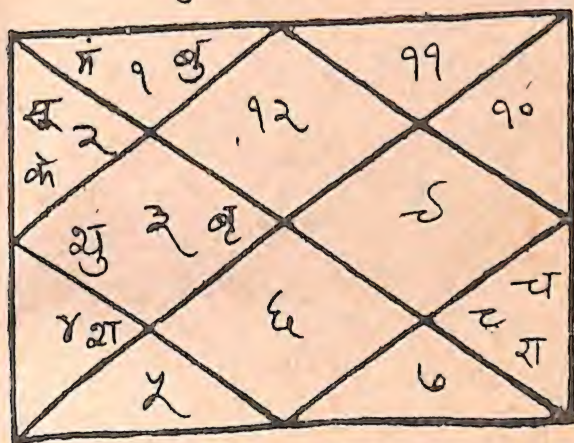
(५) प्रथम भाव में कारक ग्रह की सूर्य की कुण्डली में स्थिति।

शारीरिक गठन (पुष्टशरीर)

जिस व्यक्ति की जन्म-कुण्डली में लग्न, लग्नेश व प्रथम-भाव का कारक सूर्य प्रबल होता है, उसका शरीर हृष्ट-पुष्ट होता हैं। लग्न में शुभ राशि हो और उस पर अशुभ ग्रह की दृष्टि न हो अथवा लग्न में अशुभ ग्रह न हो, लग्नेश केन्द्र-त्रिकोण में हो,

अशुभ ग्रह से दृष्ट न हो अथवा उच्च का हो। इसी प्रकार प्रथम भाव का कारक सूर्य केन्द्र-त्रिकोण में अथवा तृतीय भाव में हो और दुःस्थान में न हो तो उस जातक का शरीर पुष्ट होता है और स्वास्थ्य अच्छा रहता है। इसके विपरीत योग होने पर निर्बल शरीर होता है और प्रायः अस्वस्थ रहता है। निम्न कुण्डली में पुष्ट शरीर के योग देखिए।

पुष्ट शरीर के योग



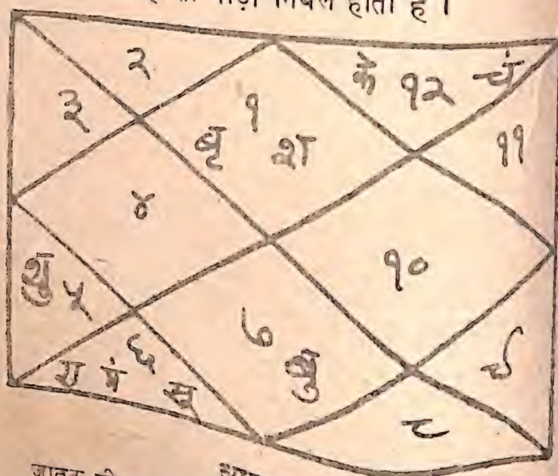
लग्न में बृहस्पति की शुभ राशि है। लग्न अशुभ ग्रह से दृष्ट भी नहीं है। लग्नेश बृहस्पति केन्द्र में है। प्रथम भाव का कारक सूर्य तृतीय भाव में है। जातक का शरीर हृष्ट-पुष्ट और स्वस्थ है।

निर्बल शरीर के योग

लग्न में शनि स्थित है। लग्नेश मंगल षष्ठ भवन (दुःस्थान) में है। जातक का शरीर निर्बल है और वह प्रायः अस्वस्थ रहता है।

अगर जन्म-कुण्डली में निर्बल शरीर के तीनों योग हों तो

जातक का शरीर बहुत निर्बल होता है, दो योग हों ती नि[illegible] होता है, एक योग हो तो थोड़ा निर्बल होता है।



व्यवसाय

जातक की कुण्डली में जो ग्रह लग्नेश होता है, जातक उ[illegible] ग्रह से सम्बन्धित वस्तुओं का व्यवसाय करता है अथवा लग्ने[illegible] जिस राशि में हो, उस राशि के स्वामी ग्रह से सम्बन्धित वस्तु[illegible] का व्यवसाय करता है अथवा लग्न में जो शुभ ग्रह हो या ल[illegible] को जो शुभ ग्रह देखता हो, जातक उसी ग्रह से सम्बन्धित वस्तु[illegible] का व्यवसाय करता है और वह उसी में सफलता भी प्राप्त करत[illegible] है। नीचे प्रत्येक ग्रह से सम्बन्धित व्यवसाय दिए गए हैं।

सूर्य—कपड़ा, रुई, कागज, फल, कृषि, कृषि से उत्पन्न वस्तुएँ।

चन्द्र—सुगन्धित वस्तुएँ, काँच, पानी, उष्ण-शीतल पेय[illegible] अगरबत्ती, कलात्मक वस्तुएँ, सजावट की वस्तुएँ, चित्रकारी[illegible] कशीदाकारी, जवाहरात, फोटोग्राफी, अभिनय, विद्युत का सामान[illegible]

मंगल—औषधियाँ, नमक, रंग, घड़ियाँ, रेडियो, टेलीफोन[illegible]

विद्युत का सामान, कोयला, खनिज, तेल, सीमेण्ट, तम्बाकू, वकालत, पुलिस, मिलिटरी, वैद्य, डॉक्टर, इन्जीनियर।

बुध—रुपयों का लेन-देन, बैंकिंग, हिसाब-खाता, गणित, ज्योतिष, कन्फैक्शनरी, जानवरों से उत्पन्न वस्तुएँ, मिठाई, क्लर्क।

बृहस्पति—एजेण्ट, दलाल, कमीशन एजेण्ट, लेखक, आयात-निर्यात, अध्यापक, प्राध्यापक, सम्पादक, कन्फैक्शनरी, क्लर्क, जानवरों से उत्पन्न वस्तुएँ।

शुक्र—संगीत, विलासिता व सजावट की वस्तुएँ, तेल, अध्यापक, प्राध्यापक, क्लर्क, सट्टा, कशीदाकारी, चित्रकारी।

शनि—मशीनरी, इन्श्योरेंस, ठेके लेना, सट्टा।

सूर्य का व्यवसाय

लग्न में सूर्य की राशि है। लग्नेश सूर्य धन भवन में है। जातक सूर्य का व्यवसाय करता है। कपड़े का बहुत बड़ा व्यापारी



है। बृहस्पति भी लग्नेश सूर्य को देखता है। अतः जातक को इस व्यवसाय में विशेष सफलता के योग हैं।

चन्द्र का व्यवसाय

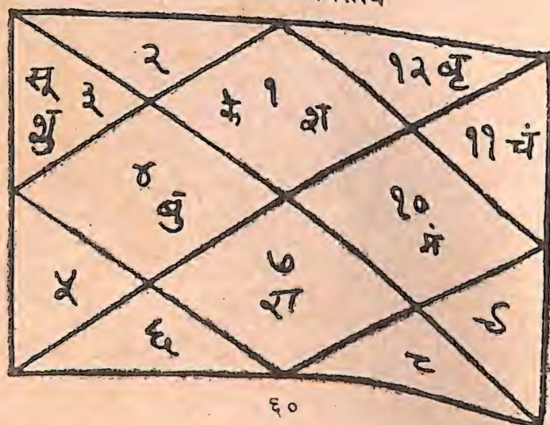
लग्न मे चन्द्र की राशि है और चन्द्र स्वयं लग्न में स्वगृही

है। जौहरी के कार्य में सफलता सूचक है। साथ ही मंगल और शनि का सम्बन्ध लग्न से होने पर इस कार्य में सफलता प्राप्त होती है। निम्न जन्म-कुण्डली में शनि भी लग्न में ही स्थित है



और मंगल की लग्न पर दृष्टि है। जातक चन्द्र का व्यवसाय करता है। एक बहुत बड़ा जौहरी है और जवाहरात के कार्य में लाखों रुपये का व्यवसाय सफलतापूर्वक करता है।

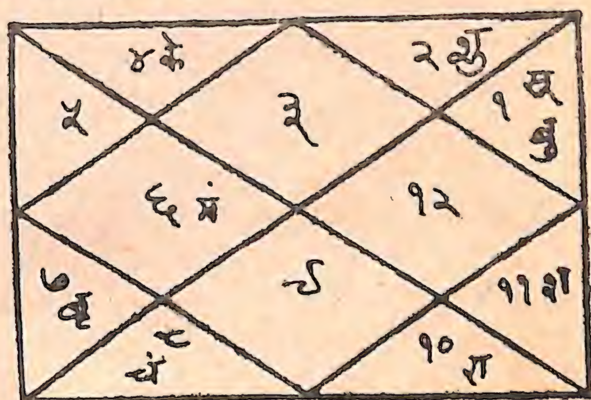
मंगल का व्यवसाय



लग्न में मेष राशि है, जिसका अधिपति मंगल है। लग्नेश मंगल उच्च का होकर केन्द्र में है और लग्न पर उसकी दृष्टि है। जातक मंगल का व्यवसाय करता है। यह एक बड़े इन्जीनियर की कुण्डली है। मंगल के साथ ही शनि का भी लग्न से सम्बन्ध होने पर इन्जीनियरिंग कार्यों में विशेष सफलता मिलती है। जातक की कुण्डली में लग्न में शनि भी स्थित है। अतः पूर्ण सफलता के योग हैं।

बुध का व्यवसाय

लग्न में बुध की राशि मिथुन है और लग्नेश बुध लाभ भवन में उच्च के सूर्य के साथ है। जातक एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त ज्योतिषी है। बुध के साथ ही बृहस्पति का सम्बन्ध भी



लग्न से हो तो विशेष सफलता के योग होते हैं। जातक की कुण्डली में भी बृहस्पति की लग्न पर दृष्टि है।

बृहस्पति का व्यवसाय

लग्न में बृहस्पति की राशि मीन है। स्वयं बृहस्पति भी धन भवन में स्थित है। जातक बहुत बड़ा कमीशन एजेण्ट है।

व्यवसाय में बृहस्पति के जातक ने लाखों रुपये की सम्पत्ति कमा
है। बृहस्पति के साथ ही मंगल का भी लग्न से सम्बन्ध होने प



उसे इस कार्य में विशेष सफलता मिलती है। प्रस्तुत जातक की कुण्डली में मंगल की लग्न पर दृष्टि है। अतः जातक एक सफल और बड़ा व्यापारी व कमीशन एजेण्ट है।

शुक्र का व्यवसाय



लग्न में शुक्र की राशि है। शुक्र त्रिकोण में सट्टे भवन में

स्थित है। जातक एक बहुत बड़ा सटोरिया (Speculator) है और शुक्र का व्यवसाय करता है। साथ ही शनि का सम्बन्ध लग्न से होने पर सट्टे के कार्य में विशेष सफलता मिलती है। जातक की कुण्डली में शनि की लग्न पर भी दृष्टि है। अतः जातक एक सफल सटोरिया है और लाखों रुपये की सम्पत्ति कमाई है।

शनि का व्यवसाय



लग्न में शनि की राशि है। लग्नेश शनि केन्द्र में है। जातक व्यवसाय करता है। यह एक बड़े ठेकेदार की कुण्डली है। मशीनरी का भी व्यवसाय है। कई ट्रक चलते हैं। साथ ही मंगल का लग्न से सम्बन्ध होने पर इस कार्य में विशेष सफलता मिलती है। जातक की कुण्डली में मंगल की लग्न पर दृष्टि भी है। अतः जातक एक सफल ठेकेदार है।

व्यापार या नौकरी

ग्रहों से सम्बन्धित व्यवसाय के बारे में जानकारी हो जाने पर किसी व्यक्ति को व्यवसाय का चुनाव करने में मार्ग-दर्शन आसानी से प्राप्त हो जाता है। अब प्रश्न उठता है कि किसी

जातक को व्यापार में विशेष सफलता मिलेगी या नौकरी में। व्यवसाय का चुनाव करने में सभी युवा पुरुषों के सामने यह कठिनाई उपस्थित होती है। आजकल अधिकांश व्यक्ति व्यापार द्वारा अधिक सम्पत्ति प्राप्त करना चाहते हैं, परन्तु केवल उन्हीं व्यक्तियों को व्यापार में सफलता मिलती है जिनकी कुण्डली में व्यापार के अच्छे योग हों। इसका निर्णय आर्थिक लाभ के आधार पर किया जा सकता है। एक नौकरी करने वाला उच्च पदाधिकारी हो सकता है, परन्तु उसकी आय निश्चित होती है और उसे निश्चित तिथि पर ही प्राप्त होती है जबकि एक व्यापारी पलक मारते ही हजारों-लाखों रुपये कमा या खो सकता है। अतः व्यापार में सफलता प्राप्त करने के लिए जन्म-कुण्डली में निम्नलिखित योग आवश्यक हैं।

व्यापार में सफलता के योग

कुण्डली में एकादश, द्वितीय, पञ्चम और नवम भाव तथा उनमें ग्रहों की स्थिति विशेष सम्पत्ति प्राप्ति के बताते हैं। अतः जिस व्यक्ति की कुण्डली में उपर्युक्त भवन व उन भवनों में स्थित ग्रह बहुत ही प्रबल व शुभ हों उसे व्यापार करना चाहिए। अन्य के लिए नौकरी करना ही श्रेयस्कर है। देखिये कुण्डली पृ० ६२ पर।

इस कुण्डली में एकादश का अधिपति शनि धन भाव में लग्नेश बृहस्पति के साथ है और एकादश भाव पर उसकी दृष्टि है। द्वितीय भाव का अधिपति मंगल केन्द्र में स्थित है और द्वितीय भाव पर उसकी दृष्टि है। पञ्चम भाव का स्वामी चन्द्र उच्च का होकर तृतीय भाव में स्थित है और भाग्य-भवन (नवम-भाव) पर उसकी दृष्टि है। नवम भाव का अधिपति मंगल केन्द्र में है और नवम भाव पर उच्च के चन्द्र की दृष्टि है। जातक की कुण्डली में एक सफल व्यापारी होने के सभी योग विद्यमान हैं। जातक

एक बहुत बड़ा व्यापारी है और व्यापार में लाखों की सम्पत्ति कमाई है।

नौकरी



एकादश भाव का स्वामी मंगल नीच राशि में है और एकादश भाव पर अष्टमेश सूर्य की दृष्टि है। द्वितीय भाव का स्वामी शनि षष्ठ भाव में चला गया है। पञ्चमेश शुक्र भी षष्ठ भाव में चला गयां है और पञ्चम भाव में अष्टमेश सूर्य स्थित है। नवम भाव का अधिपति बुध भी षष्ठ भाव में चला गया है। अतः जो योग एक सफल व्यापारी के लिए होने चाहिएँ, वे सभी निर्बल हैं। जातक प्रयत्न करने पर भी व्यापार में सफलता प्राप्त नहीं कर सका। अन्त में नौकरी की। यद्यपि जातक नौकरी में एक गजेटेड अधिकारी के रूप में रिटायर हुआ। नवमेश व दशमेश का योग होने पर उच्च पदाधिकारी भी बना, परन्तु व्यापार में सफलता प्राप्त नहीं कर सका।

द्वितीय भाव

कुण्डली का द्वितीय भाव भी एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस भाव से मुख्य रूप से जातक की आर्थिक स्थिति, पारिवारिक सुख व दाहिनी आँख आदि का ज्ञान होता है। आर्थिक स्थिति का सम्बन्ध विशेषतः इसी भाव से है।

इस भाव का अध्ययन करने से पूर्व निम्न तथ्यों का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन करना चाहिए।

(१) द्वितीय भाव और उसकी राशि।

(२) द्वितीय भाव का अधिपति और कुण्डली में उसकी स्थिति।

(३) द्वितीय भाव में स्थित ग्रह।

(४) द्वितीय भाव पर ग्रहों की दृष्टि।

(५) द्वितीय भाव के कारक ग्रह बृहस्पति की कुण्डली में स्थिति।

आर्थिक स्थिति और पारिवारिक सुख

द्वितीय भवन से जातक की आर्थिक-स्थिति व पारिवारिक सुख देखा जाता है। द्वितीय भाव में शुभ ग्रह हो अथवा शुभ ग्रह की राशि हो अथवा शुभ ग्रह से दृष्ट हो या द्वितीयेश की स्थिति कुण्डली में अच्छी हो अर्थात् द्वितीयेश केन्द्र, त्रिकोण में हो अथवा शुभ ग्रह से दृष्ट हो अथवा स्वगृही या उच्च का हो, द्वितीय भाव का कारक ग्रह बृहस्पति केन्द्र, त्रिकोण में हो अथवा उच्च का हो अथवा शुभ ग्रह से दृष्ट हो। जिस जातक की कुण्डली में उपर्युक्त सभी शुभ योग हों उसकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी रहती है और उसे पारिवारिक सुख रहता है। इसके विपरीत योग होने

पर आर्थिक तंगी अनुभव करता है और पारिवारिक परेशानियाँ रहती हैं।

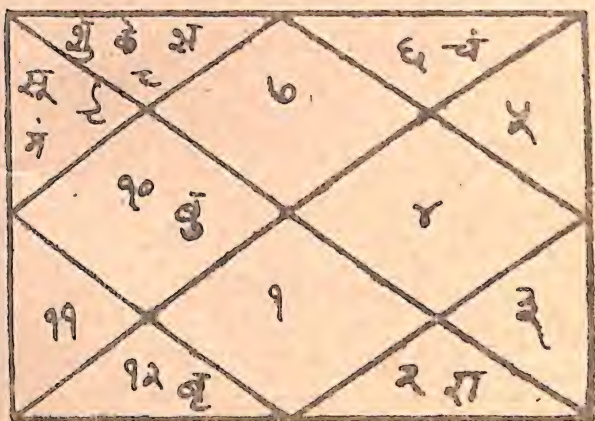
देखिए कुण्डली पृष्ठ ६३ पर।

इस कुण्डली में द्वितीय भवन में बृहस्पति की शुभ राशि है। द्वितीय भवन अधिपति बृहस्पति द्वितीय भवन में ही स्वगृही है। द्वितीय भवन का कारक बृहस्पति भी द्वितीय भवन में है और मंगल से दृष्ट है। यह एक धनी व्यक्ति की कुण्डली है जिसकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी है और पारिवारिक जीवन भी सुखद है।

दाहिनी आँख

जन्म कुण्डली में द्वितीय भाव से दाहिनी आँख और द्वादश भाव से बाँई आँख का विचार किया जाता है। इन भवनों से शनि व शुक्र का सम्बन्ध अशुभ रहता है।

(१) द्वितीय भाव में शनि या शुक्र हो अथवा द्वितीय भाव में शनि की राशि हो अथवा द्वितीय भाव पर शनि या शुक्र की



दृष्टि हो और साथ ही लग्न भाव से शनि का सम्बन्ध हो तो

दाहिनी आँख की रोशनी कमजोर होती है।

(२) अगर शुक्र किसी अशुभ ग्रह के साथ द्वितीय भवन में स्थित हो तो जातक या तो एक आँख वाला होता है अर्थात दाहिनी आँख समाप्त हो जाती है या दाहिनी आँख की रोशनी दोषपूर्ण होती है।

(३) अगर चन्द्र और मंगल की युति द्वितीय भाव में हो या अष्टम भाव में हो तो दाहिनी आँख में चिन्ह या धब्बा होता है।

(४) अगर द्वितीयेश शनि या मंगल के साथ हो तो जातक आँखों की बीमारी से पीड़ित होता है।

(५) अगर द्वितीयेश और शुक्र की युति हो तो जातक आँखों की बीमारी से पीड़ित होता है।

उपरोक्त कुण्डली में शनि और शुक्र दोनों द्वितीय भाव में स्थित हैं। लग्नेश शुक्र भी शनि के साथ है। जातक की दाहिनी आँख की रोशनी बिल्कुल समाप्त हो चुकी है।

तृतीय भाव

तीसरे भाव को पराक्रम स्थान व भ्रातृ स्थान भी कहा जाता है। इस भाव से मुख्यत: जातक का पराक्रम, भ्रातृ-सुख, विदेश यात्रा और दाहिने कान तथा दाहिने हाथ का अध्ययन किया जाता हैं।

इस भाव को देखने के लिए निम्नलिखित तथ्यों का सावधानी पूर्वक अवलोकन करना चाहिए।

(१) तृतीय भाव और उनकी राशि।

(२) तृतीय भाव का अधिपति और कुण्डली में उसकी स्थिति।

(३) तृतीय भाव में स्थित ग्रह।

(४) तृतीय भाव पर ग्रहों की दृष्टि।

(५) तृतीय भाव के कारक ग्रह की मंगल की कुण्डली में स्थिति।

पराक्रम

जिस व्यक्ति की जन्म-कुण्डली में तृतीय भाव में शुभ राशि या शुभ ग्रह हो और तृतीय भाव शुभ ग्रह से दृष्ट हो, साथ ही मंगल तृतीय भाव का कारक लग्न, तृतीय भाव व षष्ठ भाव से सम्बन्धित हो, वह जातक महान् पराक्रमी होता है।



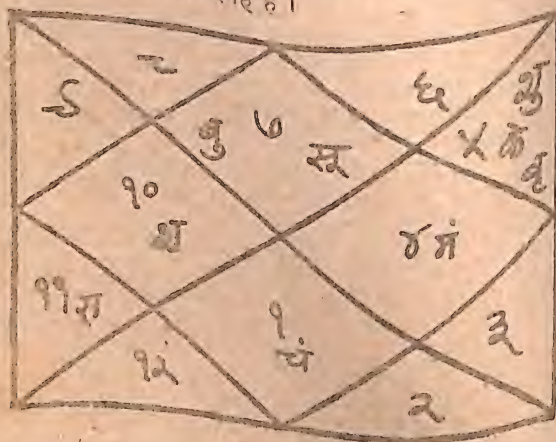
तृतीय भाव में बृहस्पति की शुभ राशि है। तृतीय भाव में शुभ ग्रह स्थित हैं। मंगल का लग्न व षष्ठ भाव से सम्बन्ध है।

मंगल चन्द्र पर दृष्टि करता है और चन्द्र तृतीय भाव को देखता है। अतः मंगल का सम्बन्ध लग्न, तृतीय व षष्ठ तीनों भवनों से है। जातक महान् पराक्रमी हुए हैं। यह कुण्डली महाराणा प्रताप की है।

भ्रातृ सुख

तृतीय भाव में शुभ राशि व शुभ ग्रह हो या शुभ ग्रह से दृष्ट हो, तृतीयेश व तृतीय भवन का कारक मंगल ६, ८, १२ में न हो या उच्च के हों, शुभ ग्रह से दृष्ट हों, उसे भ्रातृ-सुख अच्छा मिलता है।

तृतीय भवन में बृहस्पति की शुभ राशि है। तृतीयेश बृहस्पति लाभ भवन में स्थित होकर तृतीय भाव पर दृष्टि करता है। तृतीय भवन का कारक मंगल केन्द्र में है। जातक के चार भाई हैं और परस्पर अत्यधिक स्नेह है।



विदेश-यात्रा

विदेश यात्रा का योग भी तृतीय भाव से देखा जाता है। मंगल इस भवन का कारक होता है। चन्द्र जल-यात्रा का कारक

है। अतः यदि किसी व्यक्ति की जन्म-कुण्डली में तृतीय भवन से मंगल-चन्द्र का सम्बन्ध हो और साथ ही मंगल या चन्द्र का सम्बन्ध लग्न में भी हो तथा तृतीय भाव शनि से दृष्ट न हो तो उसकी कुण्डली में विदेश-यात्रा का योग होता है।



तृतीय भवन में चन्द्र स्थित है और मंगल लग्नेश बुध के साथ है। मंगल की लग्न भाव पर दृष्टि भी है। लग्न व तृतीय भाव शनि से दृष्ट नहीं है। जातक की कुण्डली में विदेश-यात्रा का योग है। जातक कई बार विदेश-यात्रा कर चुके हैं। यह कुण्डली श्री मोरारजी देसाई की है।

दाहिना हाथ व दाहिना कान

तृतीय भाव शनि से सम्बन्धित हो अर्थात् तृतीय भाव में शनि हो अथवा उसकी राशि हो अथवा शनि से दृष्ट हो। साथ ही लग्न भाव से भी शनि सम्बन्धित हो तो जातक का दाहिना हाथ व दाहिना कान पीड़ित होता है। अशुभ योग प्रबल हो तो दाहिना हाथ कट जाता है और दाहिने कान से बहरा हो जाता है।

तृतीय भाव में शनि की राशि है। तृतीय भाव पर शनि



की दृष्टि है। शनि लग्न में स्थित है। जातक का दाहिना हाथ और दाहिना कान पीड़ित है।

चतुर्थ भाव

चतुर्थ भाव कुण्डली के बारह भावों में से सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि जीवन का आनन्द, मानसिक शान्ति आदि का आधार यही भाव है। इस भाव से मुख्य रूप से मानसिक शान्ति, मकान, सवारी, मातृ-सुख, स्थानान्तरण, भागीदार व मित्र सम्बन्धी अध्ययन किया जाता है। अतः इस भाव का भी

सूक्ष्मतापूर्वक निरीक्षण करना चाहिए।

इस भाव का अध्ययन करते समय मुख्यतः निम्न तथ्यों को दृष्टि में रखना चाहिए।

(१) चतुर्थ भाव एवं उसकी राशि।

(२) चतुर्थ भाव का अधिपति और कुण्डली में उसकी स्थिति।

(३) चतुर्थ भाव में स्थित ग्रह।

(४) चतुर्थ भाव पर ग्रहों की दृष्टि।

(५) चतुर्थ भाव के कारक ग्रह की चन्द्र और बुध की कुण्डली में स्थिति।

मकान व वाहन-सुख

चतुर्थ भाव में शुभ राशि हो अथवा शुभ ग्रह हो अथवा शुभ ग्रह से दृष्ट हो, चतुर्थेश ६, ८, १२ में न होकर केन्द्र या



त्रिकोण में हो अथवा उच्च का हो। चतुर्थ भाव के कारक चन्द्र की स्थिति कुण्डली में अच्छी हो। साथ ही लग्न भाव प्रबल हो, उसे मकान का योग अच्छा रहता है। शुक्र ग्रह चूँकि वाहनाधिपति

है, अतः इस सम्बन्ध में शुक्र का भी गहराई के साथ विचा
करना चाहिए। उपर्युक्त योगों के साथ अगर कुण्डली में शुक्र क
स्थिति अच्छी हो तो जातक को उच्च वाहन की प्राप्ति होती है

चतुर्थ भाव में मंगल है। चतुर्थेश उच्च का होकर त्रिको
भाग्य भवन में है। चतुर्थ भवन का कारक चन्द्र केन्द्र में स्थित
होकर लग्न भाव को देखता है। वाहनाधिपति शुक्र उच्च क
त्रिकोण में है। जातक के पास दो कारें व कई बंगले हैं। जातक
को मकान व सवारी का अच्छा सुख है।

मानसिक शान्ति, भागीदार, मित्र-सुख

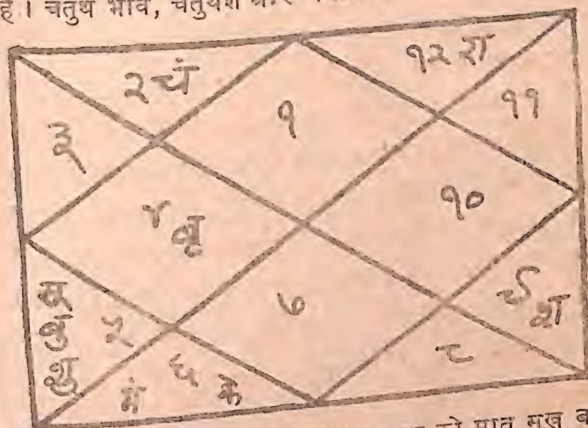
चतुर्थ भाव में शुभ ग्रह हो अथवा शुभ ग्रह से दृष्ट हो
अथवा चतुर्थेश केन्द्र त्रिकोण में हो या उच्च का हो। चन्द्र का
सम्बन्ध चतुर्थ भाव से हो या केन्द्र त्रिकोण में हो जो कि मन का
कारक है। लग्न भाव भी प्रबल हो, शनि चतुर्थ भवन व चतुर्थेश
से सम्बन्धित न हो उसे मानसिक-शान्ति की प्राप्ति होती है।
भागीदारी सम्बन्धी कार्यों में लाभ व सफलता मिलती है। मित्र
सुख अच्छा रहता है।

उपरोक्त कुण्डली में चतुर्थ भाव में मंगल है। चतुर्थेश शुक्र
उच्च का होकर त्रिकोण में है। चन्द्र चतुर्थ का कारक केन्द्र में
स्थित होकर लग्न को देखता है। शनि भी चतुर्थ भाव व चतुर्थेश
से सम्बन्धित नहीं है। जातक की कुण्डली में मानसिक शान्ति,
भागीदार व मित्र सुख के अच्छे योग बने हुए हैं।

मातृ सुख

चतुर्थ भाव व चतुर्थेश शुभ हो, चतुर्थ भाव शुभ ग्रहों से
दृष्ट हो, माता का कारक चन्द्र कुण्डली में केन्द्र, त्रिकोण या उच्च
राशि में हो। चतुर्थ भाव, चतुर्थेश और चन्द्र शनि से दृष्ट न हो
तो उसे मातृ सुख बहुत अच्छा मिलता है।

चतुर्थ भाव में चन्द्र की शुभ राशि है। बृहस्पति उच्च का होकर चतुर्थ भाव में स्थित है। माता का कारक यह चन्द्र उच्च का है। चतुर्थ भाव, चतुर्थेश और चन्द्र शनि से दृष्ट भी नहीं है।



जातक की माता दीर्घायु है और जातक को मातृ सुख बहुत अच्छा है।

स्थानान्तर



सरकारी नौकर प्रायः स्थानान्तर के विषय में पूछते रहते

हैं। स्थानान्तर दो प्रकार का होता है—इच्छित और अनिच्छित। चतुर्थेश या चतुर्थ भाव से सम्बन्धित ग्रहों की दशाओं में स्थानान्तर होता है। चतुर्थेश या चतुर्थ भाव से सम्बन्धित ग्रह शुभ हो तो इच्छित स्थानान्तर होता है और अशुभ ग्रह या शनि हो तो प्रतिकूल स्थानान्तर होता है। इसके साथ ही गोचर मंगल व सूर्य केन्द्र भावों में चलने पर स्थानान्तर के योग बनते हैं।

कुण्डली में दशम भाव में मंगल व सूर्य गोचर के अनुसार चलते हैं तब स्थानान्तर के योग बनते हैं। दशम भाव के पश्चात् लग्न भाव का नम्बर आता है। लग्न भाव में भी उपर्युक्त ग्रह गोचर के अनुसार चलने पर स्थानान्तर के योग बनते हैं। तत्पश्चात् चतुर्थ भाव या सप्तम भाव में उपर्युक्त ग्रह गोचर के अनुसार चलने पर स्थानान्तर के योग बनते हैं।

पञ्चम भाव

कुण्डली में पंचम भाव का भी विशेष महत्व है, क्योंकि इस भाव से विद्या व शिक्षा का अध्ययन किया जाता है। विद्या मानव प्रगति की आधार शिला है। पंचम भाव से विशेष रूप से विद्या, शिक्षा, सन्तान, सट्टा, लाटरी का अध्ययन किया जाता है।

पंचम भाव का अध्ययन करने से पूर्व निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिए।

(१) पंचम भाव व उसकी राशि।

(२) पंचम भाव का स्वामी और कुण्डली में उसकी स्थिति ।

(३) पंचम भाव में स्थित ग्रह ।

(४) पंचम भाव पर ग्रहों की दृष्टि ।

(५) पंचम भाव के कारक ग्रह बृहस्पति की कुण्डली में स्थिति ।

शिक्षा

पंचम भाव में शुभ ग्रह हो अथवा शुभ ग्रह से दृष्ट हो, पंच॰मेश ६, ८, १२ में न हो अथवा उच्च का हो, पंचम भवन व विद्या के कारक बृहस्पति की अच्छी स्थिति हो, लग्न भाव प्रबल हो, उसकी कुण्डली में पूर्ण विद्या योग होता है ।



पंचम भाव सूर्य व मंगल शुभ ग्रहों से दृष्ट है । पंचम भाव में बुध की शुभ राशि है । पंचमेश बुध केन्द्र में है । पंचम भाव व विद्या का कारक बृहस्पति पंचम भाव में ही स्थित है । लग्न भाव में उच्च का चन्द्र है । जातक की कुण्डली में पूर्ण विद्या योग है । जातक एम० एस० सी० पी-एच० डी० है और विदेश में अध्यापक है ।

सन्तान

सूर्य, मंगल व बृहस्पति पुरुष ग्रह हैं। चन्द्र व शुक्र स्त्री ग्रह हैं। बुध पुरुष नपुंसक ग्रह है और शनि स्त्री नपुंसक ग्रह है। पुरुष ग्रह पंचम भाव से सम्बन्धित होने पर पुत्र और स्त्री ग्रह सम्बन्धित होने पर पुत्रियाँ होती हैं। पंचम भाव में शनि या स्त्री ग्रह की राशि होने पर पुत्रियाँ अधिक होती हैं और पुरुष ग्रह की राशि होने पर पुत्र होते हैं। पंचम भाव, पंचमेश व बृहस्पति की स्थिति कुण्डली में कमजोर होने पर व साथ ही पंचम भाव से शनि या अन्य पाप ग्रह सम्बन्धित होने पर सन्तान नहीं होती है।

पंचम भाव में बृहस्पति की राशि है और पंचमेश बृहस्पति

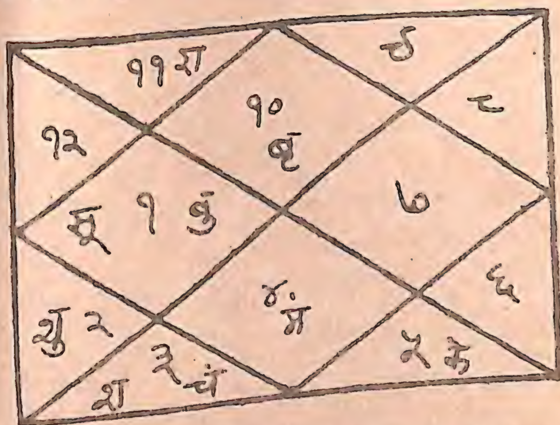


लग्न में स्थित होकर पंचम भाव पर दृष्टि करता है। जातक के ५ पुत्र हैं और सन्तान सुख बहुत अच्छा है।

सट्टा या लाटरी

कुण्डली में पंचम भाव व पंचमेश की अच्छी स्थिति हो, प्रथम भाव से शुक्र या शनि का सम्बन्ध हो, नवम भाव व नवमेश की स्थिति भी कुण्डली में अच्छी हो, उसे सट्टा में लाभ होता है,

परन्तु लाटरी के लिए विशेष भाग्यशाली होना आवश्यक है। केवल एक रुपये में हजारों या लाखों रुपये आ सकते हैं। जन्म-कुण्डली



में निम्नलिखित योग होने पर लाटरी में लाभ की आशा रखी जा सकती है। इसके लिए पंचम भाव, द्वितीय भाव और एकादश भाव, उनके स्वामी और इन भावों में ग्रहों की स्थिति का ध्यान-पूर्वक अध्ययन करना चाहिए। पंचम भाव को पूर्व कर्म या प्रारब्ध या संचित का भाव कहते हैं। एकादश भाव लाभ का भाव होता है और द्वितीय भाव से सम्पत्ति देखी जाती है। इन भावों में शुभ व प्रबल ग्रह हों या इनके स्वामियों की कुण्डली में अच्छी स्थिति हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट हो, तब लाटरी से लाभ होता है।

पंचम भाव में शुक्र स्वगृही है। पंचम भाव बृहस्पति से भी दृष्ट है। प्रथम भाव में शनि की राशि है। नवम भाव पर बृहस्पति की दृष्टि है। नवमेश बुध केन्द्र में उच्च सूर्य के साथ है। जातक एक बड़ा सटोरिया है। सट्टे में लाखों रुपये कमाये हैं, परन्तु द्वितीय का स्वामी षष्ठ भाव में चला गया है और एकादश भाव

का स्वामी नीच राशि में है, अतः जातक को लाटरी में ला
नहीं हो सकता।

षष्ठ भाव

षष्ठ भाव से मुख्यतः शत्रु, कोर्ट केसेज, रोग आदि का वि
किया जाता है।

षष्ठ भाव का अध्ययन करते समय निम्न तथ्यों की ओ
पूरा ध्यान देना चाहिए।

(१) षष्ठ भाव व उसकी राशि।

(२) षष्ठ भाव का अधिपति और कुण्डली में उसकी स्थिति

(३) षष्ठ भाव में स्थित ग्रह।

(४) षष्ठ भाव पर ग्रहों की दृष्टि।

(५) षष्ठ भाव के कारक ग्रह मंगल व शनि की कुण्डली में
स्थिति।

शत्रु, कोर्ट-केस में विजय

कुण्डली में षष्ठ भाव व षष्ठेश की स्थिति शुभ हो, मंग
का सम्बन्ध षष्ठ भाव व लग्न भाव से हो, उसे शत्रु, कोर्ट केसे
में विजय प्राप्त होती है। षष्ठ भाव, षष्ठेश व लग्न भाव से श
का सम्बन्ध होने पर असफलता मिलती है।

षष्ठ भाव में मंगल स्वगृही है। प्रथम भाव में मंगल की



राशि है और मंगल आठवीं दृष्टि से लग्न भाव को देखता है। जातक को सर्वदा कोर्ट केसेज में विजय प्राप्त होती है और शत्रु परास्त होते हैं।

रोग

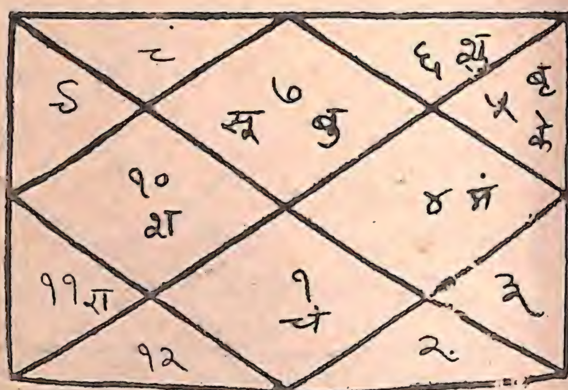
प्रथम भाव से शरीर व स्वास्थ्य देखा जाता है और षष्ठ भाव से रोगों की उत्पत्ति देखी जाती है, अतः प्रथम भाव व षष्ठ भाव से शनि इत्यादि अशुभ ग्रहों का सम्बन्ध होने पर स्वास्थ्य खराब रहता है और रोग उत्पन्न होते हैं। नीचे कुछ प्रमुख रोगों के योग दिए जाते हैं।

चेचक

प्रथम व षष्ठ भाव से शनि का सम्ब्रन्ध हो, लग्नेश दुःस्थान में हो तो जातक को चेचक की बीमारी होती है।

शनि की प्रथम भाव व षष्ठ भाव पर दृष्टि है। लग्नेश

शुक्र १२ वें भाव में है। जातक को बचपन में चेचक की बीमारी हुई।



मोतीझारा

प्रथम भाव व षष्ठ भाव का परस्पर सम्बन्ध हो, प्रथम



भाव पर शनि की दृष्टि हो और लग्नेश दु:स्थान में हो तो उसकी कुण्डली में मोतीझारा बीमारी के योग होते हैं।

षष्ठ भाव का अधिपति मंगल लग्न भाव को देखता है।

लग्न भाव में शनि स्थित है। लग्नेश मंगल भी षष्ठ भाव में है, जातक को मोतीझारा हो चुका है।

दमा

प्रथम व षष्ठ भाव से शनि का सम्बन्ध हो। साथ ही चन्द्र का लग्न भाव से सम्बन्ध हो, उस जातक की कुण्डली में दमा का योग होता है।



प्रथम भाव पर शनि की दृष्टि है। षष्ठेष बृहस्पति पर भी शनि की दृष्टि है। प्रथम भाव में चन्द्र की राशि है। चन्द्र अष्टम में है। जातक दमा रोग से पीड़ित है।

क्षय (टी. बी.)

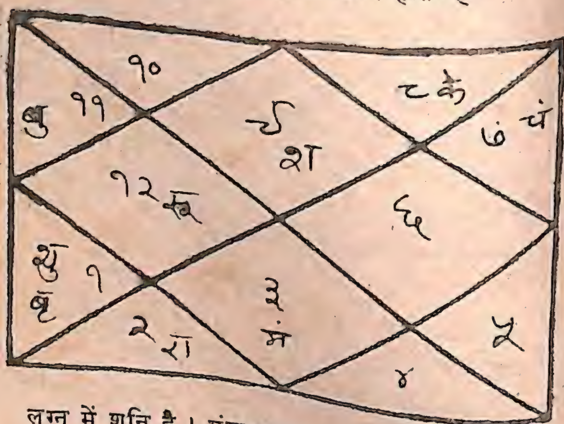
प्रथम भाव से शनि का सम्बन्ध हो, लग्नेश दुःस्थान में हो तो उसकी कुण्डली में क्षय रोग के योग होते हैं।

लग्न में शनि की राशि है। लग्नेश शनि षष्ठ भाव में स्थित है। शनि व मंगल की युति है और चन्द्र शनि से दृष्ट है। जातक क्षय रोग से पीड़ित है।



ब्लड प्रैशर

लग्न से मंगल व शनि का सम्बन्ध हो और मंगल शनि दृष्ट हो तो कुण्डली में ब्लड प्रैशर का योग होता है।



लग्न में शनि है। मंगल लग्न को देखता है और शनि की दृष्टि मंगल पर है। जातक ब्लड प्रैशर से पीड़ित है।

दाहिना पैर

शनि का सम्बन्ध प्रथम व षष्ठ भाव से होने पर दाहिने पैर में पीड़ा होने का योग होता है अथवा जातक दाहिने पैर से लँगड़ा होता है ।



लग्न भाव में शनि की राशि है और षष्ठ भाव व षष्ठेष को शनि देखता है । जातक दाहिने पैर से लँगड़ा है ।

सप्तम भाव

सप्तम भाव से पत्नी (स्त्री की कुण्डली हो तो पति) पति-पत्नी के पारस्परिक सम्बन्ध, प्रेम आदि का अध्ययन किया जाता

है। वस्तुतः देखा जाय तो सप्तम भाव बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि सप्तम भाव क्षीण हो तो जातक का जीवन अपूर्ण एवं एकांगी ही रहेगा, अतः सप्तम भाव का सूक्ष्मतम विवेचन करना चाहिए।

सप्तम भाव का विवेचन करने के लिए निम्न तथ्यों का अवलोकन सावधानीपूर्वक करना चाहिए।

(१) सप्तम भाव व उसकी राशि।

(२) सप्तम भाव का अधिपति और कुण्डली में उसकी स्थिति।

(३) सप्तम भाव में स्थित ग्रह।

(४) सप्तम भाव पर ग्रहों की दृष्टि।

(५) सप्तम भाव के कारक ग्रह शुक्र की कुण्डली में स्थिति।

सानन्द वैवाहिक जीवन

सप्तम भाव में शुभ ग्रह हो या शुभ ग्रह की राशि हो या शुभ ग्रह देखता हो, सप्तमेश दुःस्थान में न हो, सप्तम भाव के

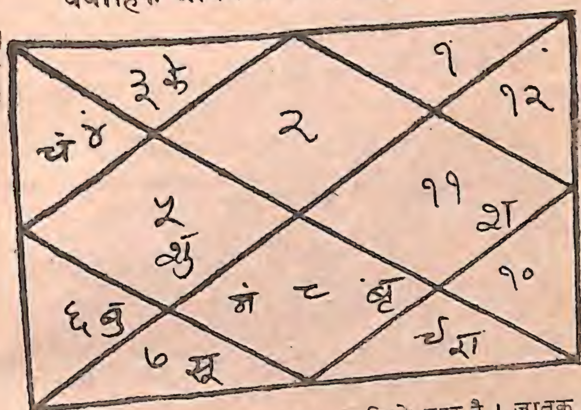


कारक ग्रह शुक्र की कुण्डली में अच्छी स्थिति हो तो वैवाहिक जीवन सानन्द रहता है। स्त्री का स्वास्थ्य अच्छा रहता है। पति-

पत्नी में अच्छा प्रेम रहता है। इसके विपरीत योग होने पर अर्थात् सप्तम भाव, सप्तमेश व शुक्र से शनि का सम्बन्ध होने पर वैवाहिक जीवन दुःखपूर्ण रहता है। स्त्री का स्वास्थ्य खराब रहता है। तीनों अशुभ योग होने पर पुरुष की कुण्डली में द्विभार्या योग तक हो जाता है और स्त्री की कुण्डली में वैधव्य योग हो जाता है।

सप्तम भाव में शुभ ग्रह हैं। सप्तमेश मंगल त्रिकोण में है। सप्तम भाव का कारक शुक्र सप्तम भाव में ही है और सप्तम भाव चन्द्र से दृष्ट है। जातक का वैवाहिक जीवन सानन्द है।

वैवाहिक जीवन के लिए अशुभ योग



सप्तम भाव व सप्तमेश मंगल शनि से दृष्ट है। जातक का वैवाहिक जीवन सानन्द नहीं है। जातक के द्विभार्या योग हो चुका है। दूसरी पत्नी का स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता है और मतभेद भी बना रहता है।

अष्टम भाव

लग्न भाव से आठवाँ स्थान अष्टम भाव कहलाता है। इस भाव से मुख्य रूप से आयु, जेल व वाम पैर के सम्बन्ध में जानकारी मिलती है।

अष्टम भाव का अध्ययन करते समय निम्न तथ्यों का ध्यान रखना चाहिए।

(१) अष्टम भाव व उसकी राशि।

(२) अष्टम भाव का अधिपति और कुण्डली में उसकी स्थिति।

(३) अष्टम भाव में स्थित ग्रह।

(४) अष्टम भाव पर ग्रहों की दृष्टि।

(५) अष्टम भाव के कारक ग्रह शनि की कुण्डली में स्थिति।

आयु

दीर्घायु के लिए लग्न भाव, अष्टम भाव व आयु का कारक शनि प्रबल होना आवश्यक है। लग्न में शुभ ग्रह हो या शुभ ग्रह की राशि हो या शुभ ग्रह से दृष्ट हो, लग्नेश दुःस्थान में न हो या उच्च का हो, अष्टमेश की स्थिति अच्छी हो। शनि केन्द्र त्रिकोण में या उच्च का हो, तो जातक दीर्घायु होता है। इसके विपरीत योग होने पर अल्पायु होता है।

लग्न में शुभ राशि व शुभ ग्रह है। लग्नेश बुध उच्च का होकर लग्न भाव में स्थित है। लग्न व लग्नेश बृहस्पति से दृष्ट

है। अष्टमेश केन्द्र में स्थित है और बृहस्पति से दृष्ट है। शनि ६, ८, १२, में न होकर द्वितीय भाव में उच्च का है। जातक



दीर्घायु था। यह कुण्डली महात्मा गाँधी की है।

जेल



लग्न व अष्टम भाव का परस्पर सम्बन्ध हो अथवा लग्न भाव से शनि का सम्बन्ध हो, मंगल से शनि सम्बन्धित हो, उसकी कुण्डली में जेल के योग होते है।

लग्न भाव व मंगल से शनि का सम्बन्ध है। जातक के जीवन में जेल के योग कई वार वन चुके हैं। यह कुण्डली एक बड़े राजनीतिक नेता की है।

वाम पैर



अष्टम भाव व लग्न भाव से शनि का सम्बन्ध होने पर वाम पैर में पीड़ा का योग बनता है।

लग्न भाव में शनि की राशि है और शनि अष्टम भाव को देखता है। जातक वाम पैर से लँगड़ा है।

नवम भाव

वस्तुत: नवम भाव जन्म कुण्डली का सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाव है, क्योंकि भाग्य के बिना पुरुषार्थ भी श्रीहीन हो जाता है। नवम भाव से मुख्यत: निम्न तथ्यों का अध्ययन किया जाता है। भाग्य, आकस्मिक लाभ, धर्म इत्यादि।

नवम भाव का अध्ययन करते समय निम्नलिखित तथ्यों को दृष्टि में रखना चाहिए।

(१) नवम भाव व उसकी राशि।

(२) नवम भाव का अधिपति और कुण्डली में उसकी स्थिति।

(३) नवम भाव में स्थित ग्रह।

(४) नवम भाव पर ग्रहों की दृष्टि।

(५) नवम भाव के कारक ग्रह सूर्य व बृहस्पति की कुण्डली में स्थिति।

भाग्यशाली होने के योग

नवम भाव में शुभ ग्रह हो अथवा शुभ ग्रह की राशि हो अथवा शुभ ग्रह से दृष्ट हो, नवमेश दु:स्थान में न होकर केन्द्र, त्रिकोण या धन भाव या लाभ भाव में हो या उच्च का हो, नवम भाव के कारक ग्रह सूर्य व बृहस्पति की कुण्डली में अच्छी स्थिति हो, लग्न भाव प्रबल हो, वह भाग्यशाली होता है। सभी शुभ योग कुण्डली में होने पर अच्छी सम्पत्ति प्राप्त करता है। नवम भाव, नवमेश व सूर्य तथा बृहस्पति से शनि का सम्बन्ध होने पर भाग्योदय में बाधा उपस्थित होती है।

नवम भाव में शुभ ग्रह चन्द्र की राशि है। चन्द्र तृतीय स्थान से भाग्य भवन पर दृष्टि करता है। नवम भाव के कारक

ग्रह सूर्य व बृहस्पति क्रमशः नवम भाव व लाभ भवन में स्थित हैं। लग्नेश मंगल केन्द्र भाव में स्थित होकर लग्न भाव को देखता है। जातक विश्व का प्रमुख व्यवसायी था। करोड़ों की सम्पत्ति प्राप्त की। यह कुण्डली हेनरी फोर्ड की है।



आकस्मिक धन-प्राप्ति

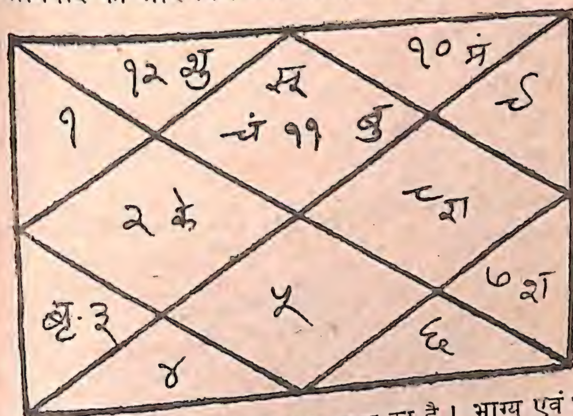
उपर्युक्त योग के साथ ही यदि पञ्चम भाव, एकादश भाव व द्वितीय भाव तथा उनके अधिपतियों की कुण्डली में अच्छी स्थिति हो, चन्द्र या शुक्र का सम्बन्ध नवम भाव या प्रथम भाव से हो तो उसे अचानक धन-प्राप्ति होती है और एक साथ अधिक सम्पत्ति मिलती है।

उपरोक्त कुण्डली में भाग्यशाली होने के सभी योग होने के साथ ही पञ्चम भाव, द्वितीय भाव व नवम भाव की स्थिति अच्छी है। पञ्चम भाव का अधिपति बृहस्पति लाभ भवन में स्थित होकर पञ्चम भाव पर दृष्टि करता है। द्वितीय भाव का अधिपति बृहस्पति लाभ भवन में स्थित है। एकादश भाव का अधिपति बुध भाग्य भवन में स्थित है। चन्द्र नवम भाव का अधि-

गति होकर नवम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। जातक की कुण्डली में अचानक सम्पत्ति प्राप्ति के सभी योग विद्यमान हैं।

धर्म

नवम भाव के शुभ योगों के साथ ही बृहस्पति का सम्बन्ध नवम भाव से होने पर धार्मिक कार्यों में रुचि होती है और आध्यात्मवाद की ओर विचारधारा बढ़ जाती है।



नवम भाव का अधिपति शुक्र उच्च का है। भाग्य एवं धर्म स्थान में उच्च का शनि स्थित है। नवम भाव के कारक ग्रह सूर्य व बृहस्पति क्रमशः केन्द्र व त्रिकोण में हैं। बृहस्पति पञ्चम दृष्टि से भाग्य भवन को देखता है। इसलिए धार्मिक विषय का ज्ञान एवं ईश्वरीय विषय का ज्ञान आपको महान् रूप से प्राप्त हुआ। यह कुण्डली श्री रामकृष्ण परमहंस की है।

दशम भाव

दशम भाव को भी अधिक महत्ता दी गई है, क्योंकि जीवन का आधार कर्म है और कर्म का हेतु दशम भाव है। अतः दशम भाव का सूक्ष्म विवेचन आवश्यक है। दशम भाव से विचारणीय विषय निम्नलिखित हैं। पद, राजयोग, पितृसुख, यश, प्रसिद्धि, पदोन्नति, हृदय आदि।

दशम भाव का अध्ययन करते समय निम्न तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिए।

(१) दशम भाव व उसकी राशि।

(२) दशम भाव का अधिपति और कुण्डली में उसकी स्थिति।

(३) दशम भाव में स्थित ग्रह।

(४) दशम भाव पर ग्रहों की दृष्टि।

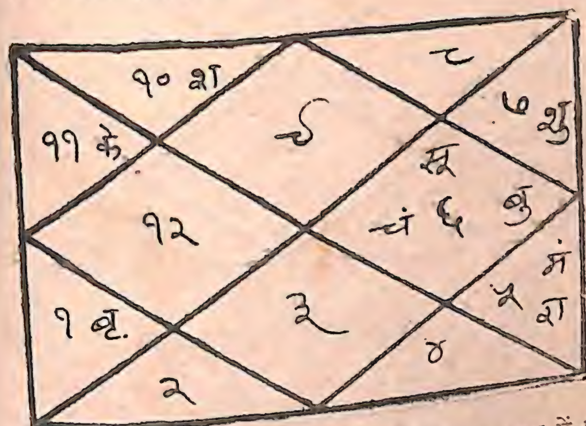
(५) दशम भाव के कारक ग्रहों की कुण्डली में स्थिति।

(६) दशमेश व नवमेश की युति।

राज योग (उच्च पदप्राप्ति)

दशम भाव में शुभ ग्रह की राशि हो या उसमें शुभ ग्रह हो या दशम भाव शुभ ग्रह से दृष्ट हो अथवा दशमेश दुःख-स्थान में न होकर केन्द्र, त्रिकोण में हो या उच्च का हो, दशम भाव के कारक ग्रह सूर्य की अच्छी स्थिति हो, लग्न भाव भी प्रबल हो उसकी कुण्डली में राजयोग प्रबल होता है। कुण्डली में

दशमेश व नवमेश की युति दशम भाव या नवम भाव या केन्द्र, त्रिकोण में हो तो राजयोग और भी प्रबल होता है। उच्च पद की प्राप्ति और प्रसिद्धि होती है।



दशम भाव में शुभ ग्रह की राशि है। दशम भाव में शुभ ग्रह स्थित हैं। दशमेश बुध उच्च का होकर दशम भाव में ही स्थित है। दशम का कारक सूर्य भी दशम भाव में है। लग्न भाव पर बृहस्पति की दृष्टि है। नवमेश सूर्य व दशमेश बुध का योग दशम भवन में है। जातक की कुण्डली में प्रबल राजयोग बना हुआ है। जातक साधारण परिस्थिति से बहुत उच्च पद को प्राप्त हुआ। यह कुण्डली भारत के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री की है।

निम्न कुण्डली में भी राजयोग बना हुआ है। भाग्येश सूर्य व राज्येश बुध की युति केन्द्र भाव में बनी हुई है। लग्न भाव में बृहस्पति स्वगृही है। जातक एक साधारण परिस्थिति से उच्च पद को प्राप्त हुआ। यह एक न्यायाधीश की कुण्डली है।



पदोन्नति

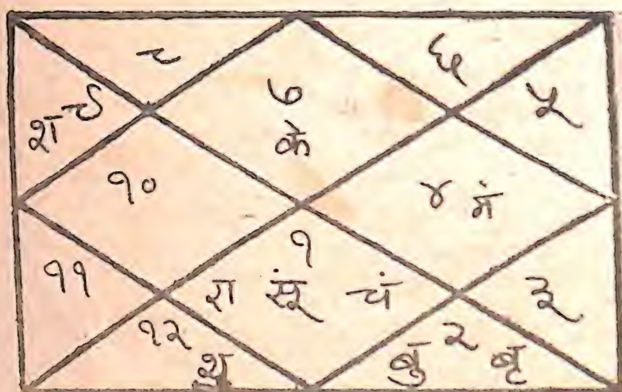
दशमेश या दशम भाव से सम्बन्धित ग्रहों की दशाओं में पदोन्नति होती है।



प्रस्तुत कुण्डली में दशमेश बृहस्पति है और बृहस्पति अपने भवन को देखता है। जातक की पदोन्नति बृहस्पति की दशा में हुई। जातक एक उच्च पदाधिकारी है।

पितृ-सुख

दशम भाव में शुभ ग्रह हो या शुभ ग्रह की राशि हो या शुभ ग्रह से दृष्ट हो, दशमेश दुःस्थान में न होकर केन्द्र, त्रिकोण में हो या उच्च का हो व शुभ ग्रहों से दृष्ट हो, पिता का कारक



ग्रह सूर्य दुःस्थान में न होकर प्रबल हो तो उसे पितृ-सुख अच्छा मिलता है। दशम भाव, दशमेश व सूर्य से शनि का सम्बन्ध होने पर या दशम भाव, दशमेश व सूर्य की स्थिति कुण्डली में कमजोर होने पर पितृ-सुख कम प्राप्त होता है।

दशम भाव में चन्द्र की शुभ राशि है। दशमेश चन्द्र केन्द्र में है। पिता का कारक सूर्य उच्च का होकर केन्द्र में स्थित है। दशम भाव, दशमेश व सूर्य से शनि का सम्बन्ध भी नहीं है। अतः जातक को बहुत अच्छा पितृ-सुख व पितृ-स्नेह प्राप्त है।

पिता-पुत्र में मतभेद

जिस व्यक्ति की जन्म-कुण्डली में सूर्य व शनि की युति हो (एक साथ बैठे हों) पिता-पुत्र में सर्वदा मतभेद रहता है और

परस्पर मनमुटाव व झगड़े होते रहते है ।



प्रस्तुत कुण्डली में षष्ठ भाव में सूर्य व शनि दोनों एक साथ हैं । पिता-पुत्र में भेदभाव व झगड़े रहते हैं और एक-दूसरे से बोलते तक नहीं हैं ।

हृदय रोग



जिस व्यक्ति की कुण्डली में दशम भाव व लग्न भाव से

शनि का सम्बन्ध होता है, उसे हृदय की बीमारी होती है।

प्रस्तुत कुण्डली में शनि लग्न में स्थित होकर दशम भाव पर दृष्टि करता है। दशमेश सूर्य पर भी शनि की दृष्टि है। अतः जातक हृदय की बीमारी से पीड़ित है।

एकादश भाव

जन्म-कुण्डली में एकादश भाव का भी महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि आय के अच्छे स्रोत पर ही मानव जीवन सुचारू रूप से चल सकता है। इस अर्थप्रधान युग में तो इस भाव का महत्व और भी बढ़ गया है। इस भाव से मुख्य रूप से आय, लाभ, वाम हाथ व वाम कान का अध्ययन किया जाता है।

इस भाव का अध्ययन करते समय निम्नलिखित तथ्यों को भली प्रकार ध्यान में रखना चाहिए।

(१) एकादश भाव व उसकी राशि।

(२) एकादश भाव का अधिपति और कुण्डली में उसकी स्थिति।

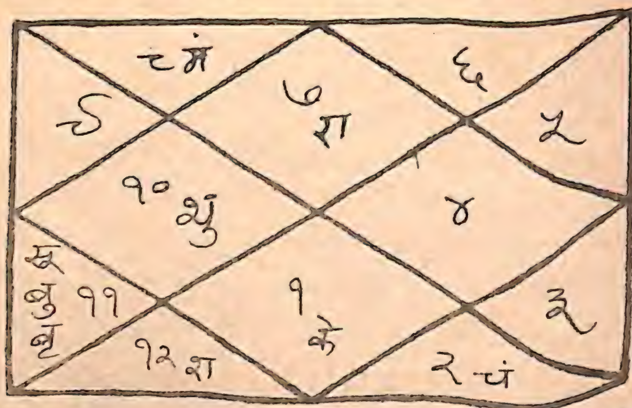
(३) एकादश भाव में स्थित ग्रह।

(४) एकादश भाव के कारक ग्रहों की दृष्टि।

(५) एकादश भाव के कारक ग्रह बृहस्पति की कुण्डली में स्थिति।

आय

एकादश भाव में शुभ ग्रह हो या शुभ ग्रह की राशि हो या शुभ ग्रह से दृष्ट हो, एकादश भाव का अधिपति दुःस्थान में न हो, लग्न भाव प्रबल हो कुण्डली में बृहस्पति की अच्छी स्थिति हो



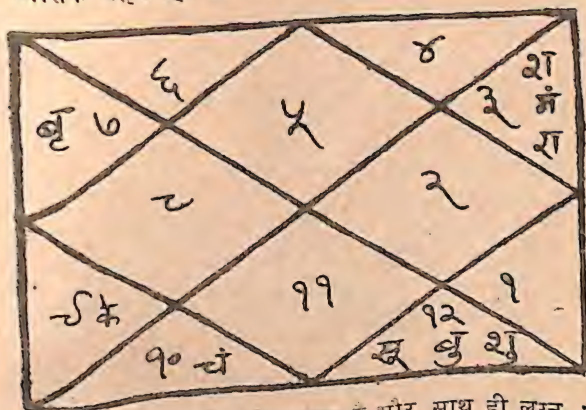
तो जातक को आमदनी योग बहुत अच्छा रहता है और रुपयों का आदान-प्रदान समय पर होता रहता है। एकादश भाव व उसके स्वामी तथा लग्न भाव से शनि का सम्बन्ध होने पर आमदनी की चिन्ता रहती है और रुपयों का आदान-प्रदान रुक जाता है।

एकादश भाव में सूर्य की शुभ राशि है। एकादश भाव का अधिपति सूर्य व कारक बृहस्पति त्रिकोण में स्थित होकर लाभ भवन पर दृष्टि करते हैं। लग्न भाव पर भी बृहस्पति की दृष्टि है। लग्नेश केन्द्र में है। जातक एक बहुत बड़ा व्यापारी है। आमदनी योग बहुत अच्छा है और रुपयों का आदान-प्रदान समय पर होता रहता है।

वाम हाथ व वाम कान

एकादश भाव शनि से सम्बन्धित हो और साथ ही लग्न

भाव भी शनि से सम्बन्धित हो अथवा लग्नेश दुःस्थान में हो, उस व्यक्ति की कुण्डली में वाम हाथ व वाम कान पीड़ित होने का योग होता है। सभी अशुभ योग होने पर वाम हाथ कट जाता है व जातक बहरा हो जाता है।



एकादश भाव में शनि स्थित है और साथ ही लग्न भाव पर शनि की दृष्टि है। लग्नेश सूर्य भी अष्टम भाव में स्थित है और शनि से दृष्ट है। जातक का वाम हाथ पीड़ित है और वह वाम कान से बहरा है।

द्वादश भाव

आय और व्यय का सन्तुलन रखने से ही समाज में जातक की प्रतिष्ठा बनी रहती है। अतः आय के भाव के साथ-साथ व्यय-भाव का भी अच्छी तरह विचार करना चाहिए।

इस भाव से मुख्य रूप से व्यय, हानि, ऋण, दिवाला, वाम नेत्र इत्यादि का अध्ययन किया जाता है।

इस भाव का अध्ययन करते समय निम्नांकित तथ्यों का अच्छी तरह विचार कर लेना चाहिए।

(१) द्वादश भाव व उसकी राशि।

(२) द्वादश भाव का स्वामी और कुण्डली में उसकी स्थिति।

(३) द्वादश भाव में स्थित ग्रह।

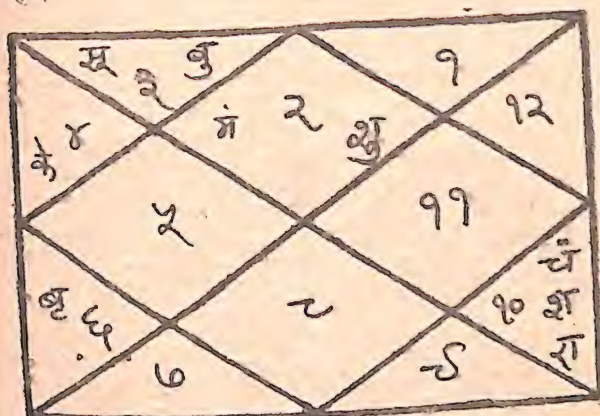
(४) द्वादश भाव पर ग्रहों की दृष्टि।

(५) द्वादश भाव के कारक ग्रह की कुण्डली में स्थिति।

व्यय, हानि, ऋण

बारहवें भवन में शुभ ग्रह हो या शुभ ग्रह की राशि हो या शुभ ग्रह से दृष्ट हो, द्वादश भाव का अधिपति शुभ ग्रहों से सम्बन्धित हो, साथ ही प्रथम भाव भी शुभ ग्रहों से सम्बन्धित हो, उसकी कुण्डली में व्यर्थ व्यय, हानि, ऋण से मुक्ति के योग होते हैं और द्वादश भाव का स्वामी और लग्न भाव से शनि का

म्बन्ध होने पर व्यर्थ व्यय अधिक होता है तथा हानि व ऋण होता है।



बारहवें भवन में मंगल की शुभ राशि है। मंगल लग्न भाव में लग्नेश शुक्र के साथ है और बृहस्पति से दृष्ट है। प्रथम भाव में शुभ ग्रह भी हैं और प्रथम भाव बृहस्पति से दृष्ट भी है। अतः जातक की कुण्डली में व्यर्थ खर्च, हानि तथा ऋण से मुक्ति के योग हैं।

वाम नेत्र

जन्म कुण्डली में द्वादश भाव से बाँई आँख देखी जाती है। शुक्र व शनि की स्थिति भी इसके लिए देखी जाती है।

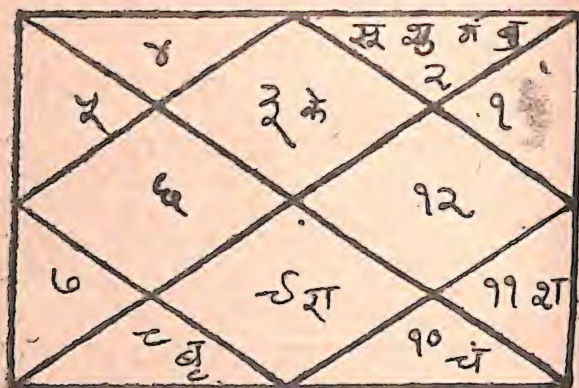
(१) अगर शुक्र, किसी अशुभ ग्रह के साथ द्वादश भाव में स्थित होता है तो जातक या तो एक आँख वाला होता है अथवा वाम नेत्र की रोशनी दोषपूर्ण होती है।

(२) अगर चन्द्र और मंगल की युति द्वादश भाव में या षष्ठ भाव में हो तो आँख में चिन्ह या धब्बा होता है।

(३) अगर द्वादश भाव का अधिपति शनि या मंगल के

साथ हो तो जातक आँखों की बीमारी से पीड़ित होता है।

(४) अगर द्वादशेश और शुक्र की युति हो तो जातक आँखों की बीमारी से पीड़ित होता है।



(५) द्वादश भाव से शनि या शुक्र का सम्बन्ध होने पर और साथ ही लग्न भाव से शनि का सम्बन्ध होने पर अथवा लग्नेश दुःस्थान में होने पर जातक की वाम नेत्र की रोशनी कमजोर होती है।

द्वादश भाव में शुक्र की राशि है और शुक्र भी उसी भाव में स्थित है। लग्नेश बुध बारहवें भवन में है। जातक के वाम नेत्र की रोशनी कमजोर है।

द्वादश लग्नों में शुभाशुभ ग्रह, व्यवसाय वर्ष, वार, रंग व रत्न

मेष लग्न

मन्द सौम्यसिताः पापाः शुभौ गुरूदिवाकरौ ।
न शुभं योगमात्रेण प्रभवेच्छनिजीवयोः ।।
परन्तु तेन जीवस्य पापत्वमपि सिध्यति ।
कविः साक्षान्निहन्ता स्यान्मारकत्वेन लक्षितः ।।
मन्दादयो निहन्तारो भवेयुः पापिनो ग्रहाः ।
शुभाशुभ फलान्येवं ज्ञातव्यानि क्रियोद्‌भवे ।।

शुभाशुभ ग्रह—मेष लग्न के लिए शनि, बुध और शुक्र अशुभ फल देते हैं । बृहस्पति और सूर्य शुभ फल प्रदान करते हैं । शनि और बृहस्पति के योग मात्र से शुभ फल नहीं मिलता । दूसरे के कारण बृहस्पति के अशुभ फल भी निश्चित ही मिलते हैं । शुक्र मारक स्थानों का अधिपति होने से घातक होता है । शनि इत्यादि पाप ग्रह घातक होते हैं । इस प्रकार कार्य के समय शुभाशुभ फल समझना चाहिए ।

शनि एकादश भवन का स्वामी होने से अशुभ फल देता है । 'The eleventh lord is the worst malefic in a horoscope'. इसी कारण बृहस्पति और शनि का योग शुभ नहीं

होता है। शनि के साथ बृहस्पति भी हो तो वह परतन्त्र होकर अशुभ बन जाता है। बुध तृतीय तथा षष्ठ स्थानों का स्वामी होने से जातक को अशुभ फल देता है। शुक्र भी दोनों ही मारक भवनों—द्वितीय व सप्तम का अधिपति होने से अशुभ फल प्रदान करता है। वह अपनी दशा तथा अन्तर्दशा में मनुष्य के लिए विनाशकर्ता होता है। इसमें किसी प्रकार का संशय नहीं है।

मेषलग्नेतु जातस्य धनसप्तमनायकः।
शुक्रः करोति निधनमिति ज्योतिषकाविदुः॥

गुरु व सूर्य मेष लग्न में शुभ फल देने वाले होते हैं। जिस मनुष्य का मेष लग्न होता है उसकी कुण्डली में पाँचवें स्थान में सिंह राशि होने से तथा नवम स्थान में धनु राशि होने से पाँचवें तथा नवम स्थान के अधिपति क्रमशः सूर्य व बृहस्पति होते हैं। अतः ये दोनों ग्रह त्रिकोणाधिपति होने से शुभ फल देने वाले होते हैं। यदि ये ग्रह स्वगृही उच्च के या केन्द्र त्रिकोण में हों तो विशेष शुभ फल प्रदान करते हैं। गुरु व शनि का योग अशुभ होता होता है। इसका कारण यह है कि गुरु मेष लग्न में नवम स्थान का अधिपति होने के साथ-साथ व्यय स्थान का भी स्वामी होता है। व्ययेश होने से वह अशुभ फल देने वाला भी होता है। शनि पाप ग्रह होने से अशुभ होता ही है और साथ ही एकादश भवन का अधिपति होने से अशुभ बन जाता है। अतः यदि मेष लग्न की कुण्डली में गुरु व शनि की युति होती है तो जातक को अशुभ फल ही प्राप्त होता है। गुरु शुभ होता है, परन्तु शनि के साथ युति होने से वह अशुभ ग्रह बन जाता है। मंगल इस लग्न के लिए राजयोगकारक होता है। लग्नेश होने से शुभ फल प्रदान करता है। लग्नेश मंगल गुरु के साथ हो तो मंगल शुभ फल देता है। अतः गुरु व मंगल यदि नवम या दशम में एक साथ स्थित हों तो अच्छा

जयोग होता है। उसके पश्चात् गुरु-चन्द्र और तत्पश्चात् रवि-
ंगल युति शुभ होती है।

मेषलग्नेषु जातस्य राजयोगोऽपि लभ्यते।
चतुर्थपञ्चमाधीश सम्बन्धेन न संशयः ॥

रवि पञ्चमेश होने से व चन्द्र चतुर्थेश होने से इनकी युति हुत शुभ होती है। यह युति चतुर्थ या पञ्चम में होनी चाहिए। रवि-चन्द्र और गुरु-मंगल ये दोनों योग इस लग्न के लिए राजयोग है।

शुभ व्यवसाय—मेष लग्न के जातक के लिए मंगल का व्यवसाय शुभ होता है। मंगल के व्यवसाय निम्नलिखित हैं :—

औषधियाँ, नमक, रंग, रेडियो, घड़ियाँ, विद्युत का सामान, टेलीफोन, कोयला, खनिज, तेल, तम्बाकू, सीमेन्ट, मिलिटरी, पुलिस, वैद्य, डाक्टर, इन्जीनियर इत्यादि।

शुभ वर्ष—मेष लग्न के जातक के लिए निम्नलिखित वर्ष शुभ होते हैं। १८, १९, २१, २२, २७, २८, २९, ३२, ३३, ३४, ३६, ४२, ४३, ४८, ४९, ५० और ५२।

शुभ वार—मंगलवार, शनिवार, शुक्रवार।

अशुभ वार—बुधवार, बृहस्पतिवार।

मिश्रित वार—सोमवार, रविवार।

शुभ रंग—लाल, नीला, सफेद।

अशुभ रंग—हरा, पीला।

शुभ रत्न—नीलम, मूंगा व हीरा।

वृषभ लग्न

जीवशुक्रन्दवः पापाः शुभौ शनिशशीसुतौ ।
राजयोगकरः साक्षादेक एव एवेः सुतः ।।
जीवादयो ग्रहाः पापाः सन्ति मारकलक्षणाः ।
बुधैस्तत्र भलान्येवं ज्ञेयानि वृषजन्मनः ।।

शुभाशुभ ग्रह—वृषभ लग्न के लिए बृहस्पति, शुक्र और चन्द्र अशुभ होते हैं। शनि और बुध शुभ ग्रह होते हैं। अकेला शनि राजयोग करता है। गुरु इत्यादि अशुभ ग्रह मारक होते हैं।

इस लग्न में गुरु आठवें तथा ग्यारहवें स्थान का अधिपति होने से अशुभ फल देता है। शुक्र लग्नेश होने के साथ-साथ छठे स्थान का अधिपति होने से अशुभ फल प्रदान करता है। चन्द्र तीसरे स्थान का अधिपति होने से अशुभ फल देने वाला होता है।

वृषभ लग्न में शनि योगकारक व शुभफलदायक होता है। इसका कारण यह है कि वृषभ लग्न में शनि नवमेश होता है। (The best benefic is saturn as he owns the 9th and 10th) शनि नवम भवन (त्रिकोण) का अधिपति होने से तथा साथ ही दशम भवन (केन्द्र) का अधिपति होने से योगकारक होकर प्रदान करता है। बुध पञ्चम भवन (त्रिकोण) का अधिपति होने से शुभ माना जाता है तथा शुभ फल प्रदान करता है। बुध यद्यपि मारक व धन स्थान का अधिपति है परन्तु ३, ६,

११ इन भावों का अधिपति नहीं है तथा पञ्चम त्रिकोण का भी अधिपति है। अतः बुध शुभ होता है। सूर्य चतुर्थ (केन्द्र) का अधिपति होने से शुभ फल प्रदान करने वाला माना गया है। मंगल सातवें मारक स्थान का तथा बारहवें स्थान का अधिपति होने से अशुभ फल प्रदान करता है।

यदि शनि और बुध की युति अच्छे स्थान में हो तो इस लग्न के लिए राजयोग होता है।

शुभ व्यवसाय—वृषभ लग्न के जातक के लिए शुक्र का व्यवसाय शुभ व लाभप्रद होता है। शुक्र के व्यवसाय निम्नलिखित हैं।

विलासिता व सजावट की वस्तुएँ, संगीत, तेल, अध्यापन कार्य, क्लर्क, सट्टा, चित्रकारी, कशीदाकारी इत्यादि।

शुभ वर्ष—१८, १९, २०, २१, २५, २८, २९, ३२, ३३, ३५, ३६, ४०, ४१, ४२, ४३, ४५, ४८, ४९, ५० और ५२।

शुभ वार—शुक्रवार, बुधवार, शनिवार, बृहस्पतिवार, रवि-वार,

अशुभ वार—मंगलवार।

शुभ रंग—गुलाबी, हरा, सफेद।

अशुभ रंग—लाल

शुभ रत्न—नीलम, हरा', पना।

मिथुन लग्न

भौमजीवारुणाः पापा एक एव कविः शुभः।
शनैश्चरेण जीवस्य योगो मेषभवो यथा ।।
नायं शशी निहन्ता स्यादुन्मिषत्पापनिष्फलम् ।
ज्ञातव्यानि दिनेशस्य फलान्येतानि सूरिभिः ।।

शुभाशुभ ग्रह—मिथुन लग्न के लिए मंगल, बृहस्पति और सूर्य अशुभ होते हैं। अकेला शुक्र शुभ होता है। मेष में शनि और गुरु की युति शुभ है। चन्द्र मारक नहीं होता है। रवि निष्फल होता है।

इस लग्न में मंगल पाप ग्रह होते हुए छठे व ग्यारहवें स्थान का अधिपति होने से विशेष रूप से पाप ग्रह माना गया है। गुरु सातवें भवन—मारक भवन का अधिपति होने से मारकेश माना गया है। अतः गुरु भी अशुभ फल दाता माना गया है। सूर्य तृतीय भवनाधिपति भी होने से पाप ग्रह माना गया है। गुरु मारकेश होने तथा साथ ही केन्द्राधिपति होने से विशेष अशुभफल दाता माना गया है—'केन्द्राधिपत्यदोषस्तु बलवान गुरुशुक्रयोः' शुक्र अकेला राजयोगकारक है क्योंकि वह पंचमाधिपति है। चन्द्र द्वितीय भवन का अधिपति (मारकेश) होने से तथा पाप ग्रहों के सहवास से अशुभ फल प्रदान करता है, अन्यथा मध्यम शुभ फल प्रदान करता है। शुक्र तथा बुध का योग राजयोगकारक माना

गया है। बुध केन्द्राधिपति होने से शुभ फलदाता माना गया है। गुरु बुध की युति भी राजयोगकारक होती है।

शुभ व्यवसाय—मिथुन लग्न के जातक के लिए बुध का व्यवसाय शुभ व लाभप्रद माना गया है। बुध के व्यवसाय निम्नलिखित हैं—

बैंकिंग, रुपयों का लेन-देन, हिसाब-खाता, गणित, ज्योतिष, जानवरों से उत्पन्न वस्तुएँ, कन्फैक्शनरी, क्लर्क, मिठाई।

शुभ वर्ष—२०, २५, २८, २९, ३२, ३३, ३५, ३६, ४० ४१, ४२, ४३, ४८, ४९, ५०, ५१, ५३ इत्यादि।

शुभ वार—बृहस्पतिवार, बुधवार, सोमवार।

मिश्रित वार—रविवार, शुक्रवार।

अशुभ वार—शनिवार, मंगलवार।

शुभ रंग—हरा, पीला, सफेद।

अशुभ रंग—नीला व लाल।

शुभ रत्न—पन्ना व पीला पुखराज।

कर्क लग्न

भार्गवेन्दुसुतौ पापौ भूसुतांगिरसौ शुभौ ।
एक एव ग्रहः साक्षाद्भूसुतो योगकारकः ।।
निहन्ता रविजोऽन्ये तु भानिनौ मारकह्वयाः ।
कुलीरसंभवस्यैवं फलान्युक्तानि सूरिभिः ।।

शुभाशुभ ग्रह—कर्क लग्न के लिए शुक्र और बुध अशुभ हैं, मंगल और गुरु शुभ हैं, अकेला मंगल राजयोगकारक है, शनि और अन्य ग्रह पापी होने से मारक अर्थात् मृत्युदाता माने गये हैं। विद्वान पुरुषों ने कर्क लग्न का फल इस प्रमाण से कहा है।

शुक्र चतुर्थ भवन का अधिपति होने से अशुभ माना गया है। अतः शुक्र इस लग्न में अशुभ फल प्रदान करता है। बुध तृतीय व व्यय भवन का अधिपति होने से पाप ग्रह माना गया है। अतः बुध भी अशुभ फल प्रदान करता है। शनि इस लग्न में मृत्यु कारक माना गया है। शनि सप्तम भाव का अधिपति होने से मारकेश तथा साथ ही आयुष्य भवन का अधिपति होने से विशेष रूप से मारक होता है। सूर्य द्वितीय मारक भवन का स्वामी होने से अशुभ फल प्रदान करता है।

कर्क लग्न में मंगल व गुरु शुभ ग्रह माने गए हैं तथा ये शुभ फल प्रदान करते हैं। "Jupiter and Mars are benefic, the better being Mars as he is lord of the 5th and

10th. मंगल पञ्चम भवन का अधिपति होने से उत्तम माना गया है। साथ ही दशम भवनाधिपति होने से शुभ होकर उत्तम फल प्रदान करता है, क्योंकि पाप ग्रह केन्द्राधिपति होने से उत्तम फल प्रदान करता है। मंगल राजयोगकर्ता होता है। गुरु स्वाभाविक रूप से शुभ व भाग्येश होने से शुभ फल प्रदान करता है। गुरु यद्यपि षष्ठेश है तथापि बलवान त्रिकोण नवम भाव का भी स्वामी है। अतः इसे शुभ माना गया है। चन्द्र-मंगल योग अच्छा होता है, किन्तु चन्द्र, मंगल प्रथम और दशम स्थान के स्वामी अर्थात् दोनों केन्द्रेश हैं। अतः गुरु-मंगल योग से इसका महत्व कम होता है। चन्द्र-मंगल का योग अच्छा है, परन्तु भाग्य स्थान में यह चन्द्र-मंगल युति हो, तब ही विशेष फल मिलता है, अन्यथा नहीं।

शुभ व्यवसाय—कर्क लग्न के जातक के लिए चन्द्र का व्यवसाय शुभ व लाभप्रद होता है। चन्द्र के व्यवसाय निम्नलिखित हैं :—

सुगन्धित वस्तुएँ, पानी, काँच, उष्ण और शीतल पेय, कलात्मक वस्तुएँ, अगरबत्ती, सजावट की वस्तुएँ, कशीदाकारी, चित्रकारी, जवाहरात, फोटोग्राफी, अभिनय, विद्युत का सामान।

शुभ वर्ष—१८, १९, २१, २२, २८, २९, ३२, ३३, ३४, ४२, ४३, ४८, ४९, ५२, ५३, इत्यादि।

शुभ वार—मंगलवार, शुक्रवार, बृहस्पतिवार, रविवार, सोमवार।

मिश्रितवार—बुधवार।

अशुभ वार—शनिवार।

शुभ रंग—सफेद, क्रीम, लाल, पीला।

अशुभ रंग—नीला, हरा।

शुभ रत्न—हीरा, मोती, माणिक्य, पीला पुखराज।

सिंह लग्न

रौहिणीयसितौ पापौ कुज एव शुभग्रहः ।
प्रभवेद्योगमात्रेण न शुभं कुजशुक्रयोः ।।
ध्वनि सौम्यादयः पापा मारकत्वेन लक्षिता ।
एवं फलानि वेद्यानि सिंहे यस्य जनुर्भवेत् ।।

शुभाशुभ ग्रह—सिंह लग्न के लिए बुध और शुक्र अशुभ हैं। मंगल शुभ ग्रह होता है। केवल मंगल और शुक्र के योग से शुभ फल नहीं मिलता। बुध आदि अशुभ ग्रह मारक होते हैं।

सिंह लग्न में बुध तथा शुक्र स्वाभाविक रूप से शुभ ग्रह होते हुए भी अशुभ फल देते हैं। इसका कारण यह है कि बुध द्वितीय (मारक) व ग्यारहवें भवन का अधिपति होता है। मारक भवन का अधिपति होने से अशुभ फलदायक माना गया है। शुक्र तृतीय व दशम (केन्द्राधिपति दोष) भवन का अधिपति होने से अशुभ फलदाता होता है। मंगल भाग्य भवन (त्रिकोण) तथा चतुर्थ भवन (केन्द्र) का अधिपति होने से शुभ माना गया है तथा श्रेष्ठ फल प्रदान करता है। मंगल के साथ शुक्र की युति होने पर अच्छा फल नहीं मिलता है। गुरु व मंगल का योग श्रेष्ठ माना गया है।

शनि षष्ठ व सप्तम (मारक) भाव का अधिपति होने से अशुभ फल देता है। सूर्य लग्नाधिपति होने से शुभ फल देता है। लग्नेश सूर्य के साथ नवमेश मंगल की युति शुभ होती है और यह ४, ५, ६, १० स्थानों में विशेष शुभ होती है। इस लग्न के लिए

चन्द्र व्ययेश होने से अशुभ फल देता है।

शुभ व्यवसाय—सिंह लग्न के जातक के लिए सूर्य का व्यवसाय शुभ व लाभप्रद होता है। सूर्य के व्यवसाय निम्नलिखित हैं :—

रुई,कपड़ा, कागज, फल, कृषि, कृषि से उत्पन्न वस्तुएँ।

शुभ वर्ष—१८, १९, २०, २१, २२, २७, २८, २९, ३४ ३५, ३६, ४२, ४३, ५१, ५३ इत्यादि।

शुभ वार—मंगलवार, रविवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार।

अशुभ वार—सोमवार, शनिवार।

शुभ रंग—नारंगी, लाल, हरा।

अशुभ रंग—नीला व सफेद।

शुभ रत्न—माणिक्य, पन्ना।

कन्या लग्न

कुजजीवेन्दव: पापा एक एव भृगु: शुभ:।
भार्गवेन्दुसुतावेव भवेतां योगकारकौ॥
निहन्ता कविरन्ये तु मारकास्तु कुजादय:।
प्रतीक्षेत फलान्युक्तान्येवं कन्याभवे बुधै:॥

शुभाशुभ ग्रह—कन्या लग्न के लिए मंगल, गुरु, चन्द्र अशुभ हैं। अकेला शुक्र शुभ है। शुक्र और बुध योगकारक होते हैं। शुक्र मारक नहीं होता है तथा मंगल आदि मारक होते हैं।

कन्या लग्न में मंगल तीसरे तथा आठवें भवन का अधिपति होता है। साथ ही स्वाभाविक रूप से पाप ग्रह भी है। अत:

मंगल अशुभ फल देता है। गुरु चतुर्थ तथा सप्तम भवन का अधिपति होता है। केन्द्राधिपति होने से अशुभ माना गया है। साथ ही सप्तम भवन का स्वामी होने से मारकेश भी माना जाता है। चन्द्र लाभेश होने से अशुभ होता है। शुक्र शुभ होता है क्योंकि यद्यपि वह मारक व धन स्थान का स्वामी है तथापि बलवान त्रिकोण नवम का भी स्वामी है, वह स्वयं मारक नहीं होता। शुक्र को शुभ लिखा गया है, परन्तु "निहन्ता कविः" लिखने से यह मालूम होता है कि शुक्र भाग्य भवन का अधिपति होने के साथ-साथ द्वितीय भवन मारक स्थान का स्वामी होने से मारक भी माना गया है, परन्तु अनुभव से यह ज्ञात होता है कि अशुभ ग्रहों के संयोग से शुक्र अशुभ फल प्रदान करता है, अन्यथा शुभ फल ही प्रदान करता है। बुध दशमेश और लग्नेश होने से नवमेश शुक्र के साथ होने पर राजयोग करता है। शनि पाँचवें स्थान त्रिकोण का अधिपति होते हुए भी स्वतः पाप ग्रह है व षष्ठ भवन का अधिपति होने से अशुभ फल देता है। सूर्य द्वादश भाव—(व्ययेश) का अधिपति होने से अशुभ फल प्रदान करता है।

शुभ व्यवसाय—कन्या लग्न के जातक के लिए बुध का व्यवसाय शुभ व लाभप्रद होता है। बुध के व्यवसाय निम्नलिखित हैं :—

बैंकिग, रुपयों का लेन-देन, हिसाब-खाता, गणित, ज्योतिष, जानवरों से उत्पन्न वस्तुयें, कन्फैक्शनरी, क्लर्क, मिठाई।

शुभ वर्ष—२०, २८, ३२, ३३, ३५, ४०, ४१, ४८, ५०, ५१, ५३ इत्यादि।

शुभ वार—बुधवार, शुक्रवार, सोमवार, बृहस्पतिवार।

अशुभ वार—मंगलवार, शनिवार, रविवार।

शुभ रंग—हरा, सफेद, पीला।

अशुभ रंग—लाल, नीला।

शुभ रत्न—पन्ना, मोती, हीरा व पीला पुखराज।

तुला लग्न

जीवार्कमहीजाः पापाः शनैश्चरबुधौ शुभौ।
भवेतां राजयोगस्य कारकौ चन्द्रतत्सुतौ॥
कुजो निहन्ति जीवाद्याः परे मारक लक्षणाः।
निहन्तारः फलान्येवं काव्यो न तु तुलाभुवः॥

शुभाशुभ ग्रह—तुला लग्न के लिए गुरु, सूर्य, मंगल अशुभ हैं, शनि, बुध, शुभ होते हैं तथा चन्द्र और बुध राजयोगकारक होते हैं। मंगल, गुरु, सूर्य जातक के लिए विघातक होते हैं। शुक्र शुभ फल प्रदान करता है।

गुरु तृतीय तथा षष्ठ भवन का अधिपति होने से अशुभ फल प्रदान करता है। सूर्य ११वें भवन का स्वामी होने से अशुभ माना गया है। "The 11th lord is the worst malefic."

शनि चतुर्थ, केन्द्र और पञ्चम त्रिकोण का अधिपति होने से शुभ होता है। बुध भाग्येश है, अतः शुभ है तथा बुध के साथ दशमेश चन्द्र की युति राजयोगकारक होती है। शुक्र लग्नेश होने से शुभ फल प्रदान करता है। तुला लग्न में उत्पन्न जातक धनवान और भाग्यशाली होता है :—

तुलायां जायमानस्तु पुरुषो धनवान भवेत्।
भाग्यवांश्चभवत्ये नवंशयो नास्थिवै ध्रुवम्॥

शुभ व्यवसाय—तुला लग्न के जातक के लिए शुक्र का

व्यवसाय शुभ व लाभप्रद होता है। शुक्र के व्यवसाय निम्नलिखित हैं :—

विलासिता व सजावट की वस्तुएँ, संगीत, तेल, अध्यापन-कार्य, सट्टा, क्लर्क, चित्रकारी, कशीदाकारी इत्यादि।

शुभ वर्ष—१८, १९, २०, २१, २२, २७, २८, २९, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ४०, ४१, ४२, ४३, ४८, ४९, ५०, ५१ व ५३ इत्यादि।

शुभ वार—रविवार, सोमवार, शनिवार, मंगलवार।

मिश्रित वार—बुधवार, शुक्रवार।

अशुभ वार—बृहस्पतिवार।

शुभ रंग—नारंगी, सफेद, लाल।

अशुभ रंग—हरा, पीला।

शुभ रत्न—हीरा, माणिक्य।

वृश्चिक लग्न

सौम्यभौमासिताः पापाः शुभौ गुरुनिशाकरौ।
सूर्याचन्द्रमसावेव भवेतां योगकारकौ॥
जीवो निहन्ता सौम्याद्या हन्तारो मारकाह्वयाः।
तत्तत्फलानि विज्ञेयान्येवं वृश्चिकजन्मनः॥

शुभाशुभ ग्रह—वृश्चिक लग्न के लिए बुध, मंगल, शनि अशुभ होते हैं। गुरु व चन्द्र शुभ होते हैं। सूर्य और चन्द्र का योग राजयोगकारक होता है। 'जीवो निहन्ता' द्वारा गुरु को इस लग्न में विनाशकर्त्ता भी माना गया है।

बुध आठवें तथा ग्यारहवें भवन का अधिपति होने से अशुभ फल प्रदान करता है। मंगल षष्ठेश होने से अशुभ फल प्रदान करता है। शनि तृतीय भवन का अधिपति होने से अशुभ फल प्रदान करता है।

गुरु पञ्चम स्थानाधिपति होने से तथा चन्द्र नवम् स्थानाधिपति होने से दोनों त्रिकोणाधिपति होते हैं। अतः शुभ फल प्रदान करते हैं। सूर्य और चन्द्र का योग उत्तम होता है। इसका कारण यह है कि सूर्य दशम भवन (केन्द्र) का अधिपति होता है। अतः इन दोनों का नवम्-दशम स्थानाधिपति होने से साहचर्य योग उत्तम प्रकार का फल देता है। 'जीवो निहन्ता' द्वारा गुरु को इस लग्न में विनाशकर्त्ता भी माना गया है। गुरु त्रिकोणाधिपति शुभ होते हुए भी द्वितीय मारक स्थान का अधिपति होने से मारकेश मानकर विनाशकर्त्ता माना गया है। शुक्र सप्तम भवन का स्वामी होने से मारकेश व विनाशकारक होता है।

नवमेश चन्द्र और दशमेश सूर्य की युति चतुर्थ, पञ्चम या नवम स्थान में ही विशिष्ट फल देती है। रवि-चन्द्र की पूर्ण युति होना भी जरूरी है। दशम-नवम की अपेक्षा चतुर्थ-पञ्चम में यह युति अधिक अच्छी होती है। रवि-गुरु योग भी अच्छा होता है, परन्तु यह योग रवि-चन्द्र योग से कुछ कम स्तर का है।

शुभ व्यवसाय—वृश्चिक लग्न के जातक के लिए मंगल का व्यवसाय शुभ व लाभप्रद होता है। मंगल के व्यवसाय निम्नलिखित हैं :—

औषधियाँ, रंग, नमक, घड़ियाँ, रेडियो, विद्युत का सामान टेलिफोन, कोयला, तम्बाकू, खनिज, तेल, सीमेण्ट, वकालत, मिलिटरी, पुलिस, वैद्य, डाक्टर, इन्जीनियर इत्यादि।

शुभ वर्ष—१८, १६, २१, २२, २७, २८, २६, ३२, ३३ ३४, ३६, ४२ ४३, ४८, ४६, ५२ इत्यादि।

शुभ वार—रविवार, सोमवार, मंगलवार, बृहस्पतिवार।
मिश्रितवार—शुक्रवार।
अशुभ वार—बुधवार, शनिवार।
शुभ रंग—पीला, लाल, नारंगी, क्रीम।
अशुभ रंग—नीला, सफेद, हरा।
शुभ रत्न—पीला पुखराज, मूंगा, माणिक्य।

धनु लग्न

एक एव कविः पापः शुभौ सौम्यदिवाकरौ।
योगो भास्करसौमायां निहन्ता भास्वतः सुतः॥
घनन्ति शुक्रादयः पापां मारकत्वेन लक्षिता।
ज्ञातव्यानि फलान्येवं चापजस्य मनीषिभिः॥

शुभाशुभ ग्रह—धनु लग्न के लिए अकेला शुक्र अशुभ है, बुध, सूर्य शुभ होते हैं। बुध-सूर्य का योग राजयोग होता है। सूर्यपुत्र शनि इस लग्न में मृत्युकारक होता है। शुक्र आदि मारक होते हैं।

धनु लग्न में शुक्र पाप ग्रह माना गया है और अशुभ फल प्रदान करता है। इस लग्न में शुक्र छठे तथा ग्यारहवें भवन का अधिपति होता है। इसी कारण शुक्र को अशुभ माना गया है। त्रिषडाय में से दो स्थानों का यह स्वामी है। नवमेश रवि व दशमेश बुध की युति को राजयोग कहा गया है। अतः इन दोनों का योग शुभ माना गया है और उत्तम फल प्रदान करता है। "When a kendradhipathi (Angular lord) becomes

associated with a Trikonadhipalhi (Tringal lord) then a Rajayoga is caused.

धनु लग्न में बुध संयोग के अनुसार ही फल देता है। वह सूर्य के साथ सर्वदा श्रेष्ठ फल देता है। बुध सप्तम तथा दशम भवन का अधिपति होता है, अतः केन्द्राधिपति दोष लगता है। साथ ही सप्तम मारक भवन का भी अधिपति होता है। अतः मारकेश होने के कारण अशुभ फल भी प्रदान करता है। सारांश यह है कि बुध संयोग व स्थिति के अनुसार ही फल प्रदान करता है।

शनि इस लग्न में मृत्युकारक होता है। इसका कारण यह है कि इस लग्न में शनि द्वितीय व तृतीय भवन का अधिपति होता है। तृतीय भवन का अधिपति होने से अनिष्टकारक होने के साथ-साथ द्वितीय भवन का अधिपति होने से मारकेश भी होता है। स्वाभाविक रूप से भी यह पाप ग्रह है। इन सभी कारणों से यह अशुभ ग्रह माना गया है तथा अपनी दशा-अर्न्तदशा में अशुभ फल प्रदान करता है। मंगल व्यय के साथ पञ्चम त्रिकोण का भी अधिपति होने से शुभ होता है। नवमेश रवि के साथ पञ्चमेश मंगल का योग राजयोग बनाता है। इस लग्न के लिए रवि-बुध का योग शुभ, प्रथम श्रेणी का राजयोग होता है, तदनन्तर रवि मंगल का योग होता है।

गुरु चतुर्थ स्थानाधिपति होने से केन्द्राधिपति के रूप में उत्तम फल नहीं दे सकता। चन्द्र अष्टमेश होने से इसके फल भी अशुभ ही होते हैं।

शुभ व्यवसाय—धनु लग्न के जातक के लिए बृहस्पति का व्यवसाय लाभप्रद होता है। बृहस्पति के व्यवसाय निम्नलिखित हैं :—

एजेण्ट, दलाल, कमीशन एजेण्ट, लेखक, आयात-निर्यात, अध्यापन-कार्य, सम्पादक, कन्फैक्शनरी, क्लर्क, जानवरों से उत्पन्न वस्तुएँ।

शुभ वर्ष—१०, १८, १९, २७, २८, २९, ३६, ४२, ४३ ५४, ६३ इत्यादि।

शुभ वार—बुधवार, शुक्रवार, बृहस्पतिवार, रविवार।

मिश्रितवार—शनिवार।

अशुभ वार—सोमवार, मंगलवार।

शुभ रंग—सफेद, क्रीम, हरा, नारंगी, हल्का नीला।

अशुभ रंग—लाल, मोतिया।

शुभ रत्न—पन्ना, नीलम।

मकर लग्न

कुजजीवेन्दवः पापाः शुभौ भार्गवचन्द्रजौ।
स्वयं चैव निहन्ता स्यान्मन्दो भौमादयः परे॥
तत्तात्क्षणन्निहन्तारः कविरेकः सुयोगकृत्।
ज्ञातव्यानि फलान्येवं विबुधैर्मृगजन्मनः॥

शुभाशुभ ग्रह—मकर लग्न के लिए मंगल, गुरु और चन्द्र अशुभ हैं तथा शुक्र, बुध शुभ हैं। शनि मृत्युकारक है। अकेला शुक्र राजयोगकारक होता है।

मंगल पाप ग्रह होने के साथ-साथ चतुर्थ व ग्यारहवें भवन का अधिपति होता है, अतः मंगल अशुभ फल देता है। "The lord of 11th house is the most malefic planet in a

Birth chart." गुरु तृतीयेश व व्ययेश होने से अशुभ फल देता है। चन्द्र सप्तम भवन, मारक भवन का अधिपति होने से अशुभ फल प्रदान करता है।

शुक्र पञ्चम भवन (त्रिकोणाधिपति) व दशम भवन (केन्द्राधिपति) होने से योगकारक हो जाता है और श्रेष्ठ फल प्रदान करता है। बुध नवम भवन (त्रिकोणाधिपति) होने से अशुभ फल देता है, साथ ही छठे भवन का स्वामी होने से श्रेष्ठ फल में बाधा डालता है, परन्तु मकर लग्न की कुण्डली में बुध शुक्र के साथ बैठने से श्रेष्ठ फल प्रदान करता है।

शनि लग्नेश होता है, परन्तु साथ ही द्वितीय भवन (मारक स्थान) का अधिपति होने से व स्वयं पाप ग्रह होने से बहुत खराब फल देता है। सूर्य अष्टम भवन का स्वामी होने से शुभ फल प्रदान नहीं करता।

शुभ व्यवसाय—मकर लग्न के जातक के लिए शनि का व्यवसाय शुभ व लाभप्रद होता है। शनि के व्यवसाय निम्नाङ्कित हैं :—

मशीनरी, इन्श्योरेंस, ठेके लेना, सट्टा आदि।

शुभ वर्ष—२०, २१, २२, २६, ३२, ३३, ३४, ३५, ४० ४१, ४२, ४३, ४८, ४६, ५०, ५३ इत्यादि।

शुभ वार—शुक्रवार, मंगलवार, शनिवार, बुधवार।

मिश्रित वार—बृहस्पतिवार, रविवार।

अशुभ वार—सोमवार।

शुभ रंग—सफेद, लाल, नीला।

अशुभ रंग—पीला, क्रीम।

शुभ रत्न—हीरा, माणिक्य, नीलम।

कुम्भ लग्न

जीवचन्द्रकुजाः पापा एको दैत्यगुरुः शुभः
राजयोगकरो भौमः कविश्चैव बृहस्पतिः ॥
निहन्ता घनन्ति भौमाद्या मारकत्वेन लक्षिता ।
एवमेव फलान्युक्तान्येतानि घटजन्मनः ॥

शुभा शुभ ग्रह—कुम्भ लग्न के लिए गुरु, चन्द्र, मंगल अशुभ होते हैं। एक शुक्र शुभ होता है। मंगल व शुक्र की युति राजयोगकारक होती है। गुरु व मंगल अशुभ फल देते हैं।

कुम्भ लग्न की कुण्डली में गुरु द्वितीय (मारक) भवन का अधिपति होने से अशुभ माना गया है। चन्द्र षष्ठ भवन का स्वामी होने से अशुभ फल देता है। मंगल तृतीय भवन का स्वामी होने के कारण अशुभ माना गया है, परन्तु वह दशम भवन का स्वामी भी होता है। अतः कुम्भ लग्न की कुण्डली में मंगल शुक्र के साथ बैठता है तो राजयोग बनाता है और उत्तम फल प्रदान करता है। इसका कारण यह है कि शुक्र नवम भवन का अधिपति होने से त्रिकोणाधिपति होता है। साथ ही मंगल १०वें भवन का स्वामी होने से केन्द्राधिपति के रूप में उत्तम माना गया है। अतः शुक्र-मंगल का साहचर्य योग राजयोग माना गया है और दोनों ग्रह अपनी दशा-अन्तर्दशा में उत्तम फल प्रदान करते हैं।

सूर्य सप्तम स्थानाधिपति होने से मारकेश होता है और अशुभ फल देता है। बुध पञ्चम स्थान (त्रिकोण) का अधिपति होने से व साथ ही अष्टम स्थान का स्वामी होने से अशुभ होता है। अतः बुध मध्यम फल देता है।

शनि लग्नेश होने से शुभ, परन्तु साथ ही व्ययेश होने से अशुभ अर्थात मध्यम फल देता है।

शुभ व्यवसाय—कुम्भ लग्न के जातक के लिए शनि का व्यवसाय शुभ व लाभप्रद होता है। शनि के व्यवसाय निम्नलिखित हैं :—

मशीनरी, ठेका लेना, इन्शयोरेंस, सट्टा आदि।

शुभ वर्ष—१८, १९, २०, २१, २२, २७, २८, २९, ३४ ३५, ३६, ४२, ४३, ५०, ५१, ५३ इत्यादि।

शुभ वार—बृहस्पतिवार, शुक्रवार, मंगलवार, सोमवार।

मिश्रित वार—शनिवार।

अशुभ वार—बुधवार, रविवार।

शुभ रंग—पीला, लाल, सफेद, क्रीम।

अशुभ रंग—नारंगी, हरा, नीला।

शुभ रत्न—हीरा, पीला पुखराज, माणिक्य।

मीन लग्न

मन्दशुक्रांशवः सौम्यः पापा भौमविधू शुभौ ।
महीसुतगुरोर्योगे कारणेनैव भूसुतः ।।
मारकान् कारकान् वीक्ष्य मन्दाद्या घ्नन्ति पापिनः ।
इत्युह्यानि फलान्येवं बुधैस्तु मीनजन्मनः ।।

शुभाशुभ ग्रह—मीन लग्न के लिए शनि, शुक्र, सूर्य, बुध, अशुभ होते हैं तथा मंगल और चन्द्र शुभ होते हैं। मंगल व गुरु का योग शुभ होता है। शनि इत्यादि अशुभ ग्रह मारक कारकों को देखकर हानि करते हैं।

शनि पापग्रह के साथ-साथ ग्यारहवें व बारहवें भवन का अधिपति होने से अशुभ फल देता है। शुक्र तृतीय तथा अष्टम भवन का स्वामी होने से पाप ग्रह माना गया है और अशुभ फल देता है। सूर्य षष्ठ भवन का अधिपति होने से अशुभ माना गया है और अशुभ फल देता है। बुध को अशुभ फलदायक, इसलिए माना गया है कि वह मिथुन तथा कन्या राशि का स्वामी होने के कारण मीन लग्न की जन्म कुण्डली में चतुर्थ तथा सप्तम केन्द्र भवनों का अधिपति होता है। "शुभ ग्रह केन्द्राधिपति के रूप में अशुभ फलदाता होता है।" अतः इस लग्न में बुध को अशुभ माना गया है।

मंगल भाग्य भवन का अधिपति (त्रिकोणाधिपति) होने के कारण शुभ फल प्रदान करता है। चन्द्र पंचम भवन का स्वामी (त्रिकोणाधिपति) होने से शुभ फल प्रदान करता है।

मंगल और गुरु का योग इस लग्न में राजयोगकारक माना गया है। कारण यह है कि मंगल नवम भवन का स्वामी (त्रिकोणाधिपति) होता है और गुरु दशम भवन का अधिपति (केन्द्राधिपति) होने से दोनों का साहचर्य योग उत्तम प्रकार का राजयोग माना गया है तथा श्रेष्ठ फल प्रदान करता है।

शुभ व्यवसाय—मीन लग्न के जातक के लिए बृहस्पति का व्यवसाय शुभ व लाभदायक होता है। बृहस्पति के व्यवसाय निम्नलिखित हैं :—

अध्यापन कार्य, सम्पादक, ज्योतिषी, लेखक, कवि, प्रकाशक, क्लर्क, दलाल, कमीशन एजेन्ट, आयात-निर्यात, न्यायाधीश, धार्मिक कार्य कराने वाला, जानवरों का व्यापार, दूध व मिठाई का व्यापार इत्यादि।

शुभ वर्ष—२०, २१, २२, २६, ३४, ३५, ४२, ४३, ५० ५१, ५२, ५३ इत्यादि।

शुभ वार—बृहस्पतिवार, मंगलवार, रविवार।

मिश्रित वार—शुक्रवार, शनिवार।

शुभ रंग—लाल, पीला, गुलाबी, नारंगी।

अशुभ रंग—नीला, सफेद।

शुभ रत्न—मूंगा, पीला पुखराज।

प्रस्तुत पुस्तक में ज्योतिष के आवश्यक उपादेय विषयों को एक ही स्थान पर बोधगम्य रूप में उपस्थित कर दिया गया है, जिसकी सहायता से कोई भी व्यक्ति सफल ज्योतिषी बन सकता है।

पुस्तक में जहाँ कतिपय नवीन विषय दिये गये हैं वहीं अन्य विषयों पर नवीन दृष्टिकोण से प्रकाश भी डाला गया है, जिसके कारण पुस्तक ज्योतिष के नवीन शिक्षार्थियों के साथ-साथ विद्वानों के लिये भी लाभप्रद बन गई है।

ज्योतिष-प्रेमियों के लिए एक आवश्यक पुस्तक



अनुपम पॉकेट बुक्स